



INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO



सत्यमेव जयते

BPSC



LATEST EDITION

HINDI MEDIUM



**HANDWRITTEN
NOTES**

BPSC

(PRE+MAINS)

**ACHIEVE YOUR DREAM THROUGH SELF STUDY
WITH INFUSION NOTES**

BASED ON NEW EXAM PATTERN

PART-1 भारत और बिहार का इतिहास



INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

BPSC

PRE + MAINS

BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग - 1

भारत और बिहार का इतिहास

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “BPSC (Bihar Public Service Commission) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)” को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को बिहार लोक सेवा आयोग (RPSC) द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)” भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे /

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

Whatsapp करें - <https://wa.link/gubxrij>

Online Order करें - <https://bit.ly/42AN5s2>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2023)

भारत का इतिहास		
क्र.सं.	अध्याय	पेज.नं.
1.	भारत के सांस्कृतिक आधार <ul style="list-style-type: none">• सिन्धु घाटी सभ्यता• भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,• वैदिक काल• साहित्यिक स्रोत	1
2.	प्राचीन एवं मध्य कालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन <ul style="list-style-type: none">• बौद्ध धर्म• जैन धर्म• शैव धर्म• धर्म दर्शन• वेदान्त	17
3.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ <ul style="list-style-type: none">• मौर्य वंश• कुषाण वंश• सातवाहन राजवंश• गुप्त वंश• चालुक्य वंश• पल्लव राजवंश• चोल राजवंश	37

4.	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु <ul style="list-style-type: none"> • सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं • मूर्ति-कला: • चित्रकला: • काव्यग्रंथ और नाटक • लोककला शैलियाँ • भारतीय चित्रकला • भारतीय नृत्य कलाएं 	70
5.	प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास <ul style="list-style-type: none"> • साहित्य • संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल • प्रमुख साहित्यिक रचनायें 	105
	मध्यकालीन भारत	
1.	अरब आक्रमण	124
2.	सल्तनत काल <ul style="list-style-type: none"> • गुलाम वंश • खिलजी वंश • तुगलक वंश • सैयद वंश • लोदी वंश - • बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य 	128

3.	मुग़ल काल	146
4.	मध्यकाल में कला एवं वास्तु	152
5.	भक्ति तथा सूफी आंदोलन	162
	<u>आधुनिक भारत का इतिहास</u> (प्रारम्भिक 19वीं शताब्दी से 1965 तक)	
1.	भारत में यूरोपीय कम्पनियों का आगमन <ul style="list-style-type: none"> • मराठा साम्राज्य • गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय एवं उनके कार्य 	170
2.	राष्ट्रवाद का उदय <ul style="list-style-type: none"> • 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह • 1857 ई. की क्रांति • भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय • प्रेस (भारत में पत्रकारिता का विकास) • 19वीं तथा 20वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन : विभिन्न नेता एवं संस्थाएँ 	196
3.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन <ul style="list-style-type: none"> • कांग्रेस की स्थापना : • उदारवादी आंदोलन • स्वदेशी आंदोलन • क्रांतिकारी आंदोलन 	225

	<ul style="list-style-type: none"> • गाँधीवाद • महत्वपूर्ण योगदानकर्ता एवं देश के अलग-अलग हिस्सों का योगदान 	
4.	<p>स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन</p> <ul style="list-style-type: none"> • देशी रियासतों का एकीकरण (Integration of Princely States) • राज्यों का भाषायी पुनर्गठन • नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास 	287
<u>बिहार का इतिहास</u>		
1.	बिहार : एक परिचय	308
2.	<p>प्राचीनकालीन बिहार</p> <ul style="list-style-type: none"> • बिहार के इतिहास के अध्ययन संबंधी स्रोत • बिहार का आर्यीकरण और राज्य का निर्माण • मगध साम्राज्य का उत्कर्ष • हर्यक वंश • नन्द वंश • मौर्य साम्राज्य • शुंग वंश • कण्व वंश • गुप्तकाल 	309
3.	<p>पूर्व मध्यकालीन बिहार</p> <ul style="list-style-type: none"> • पाल कालीन बिहार 	328

	<ul style="list-style-type: none"> • मिथिला में स्वतंत्र सत्ता का उदय • बिहार में तुर्क शासन • बिहार पर अफगान प्रभुत्व • सूरवंश • मुगल साम्राज्य • बंगाल के नवाब और बिहार • जनजातीय का उदय • बिहार में यूरोपीय व्यापारी वर्ग का प्रादुर्भाव 	
4.	<p>आधुनिक बिहार</p> <ul style="list-style-type: none"> • ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह : • बक्सर युद्ध • बहावी आन्दोलन • जनजातीय विद्रोह • 1857 के विद्रोह में बिहार का योगदान • बिहार और राष्ट्रीय आन्दोलन • बिहार सोशलिस्ट पार्टी • अन्य संगठन • द्वैध तथा संवैधानिक प्रगति • स्वतंत्रता का उदय 	346

प्राचीन भारत का इतिहास

अध्याय - 1

भारत के सांस्कृतिक आधार

• सिन्धु घाटी सभ्यता

इतिहास का अध्ययन :-

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

• वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।

• मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल -

• आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे - सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।

• इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।

• इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं।

• इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

• यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी।

• इस सभ्यता को सबसे पहले **हड़प्पा सभ्यता** नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा** की गई थी।

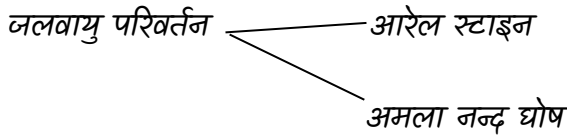
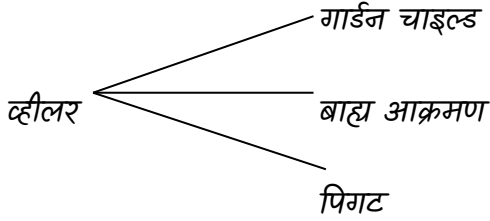
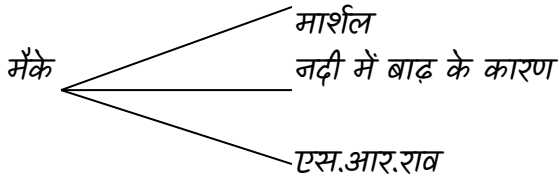
इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है →

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया।
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता - ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रांति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव **घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में **राखलदास बनर्जी** ने मोहनजोदड़ों की खोज की।

• सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है।
- मंगोलियन - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है।
- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**
 कार्बन 14 (C¹⁴) - 2500 से 1750 ई.पू.
 हिलेर - 2500-1700 ई.पू.
 मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश



प्राकृतिक आपदा - केन्यू आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार →

- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान और भारत में ही मिलता है।

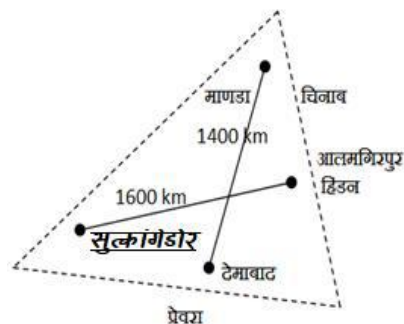
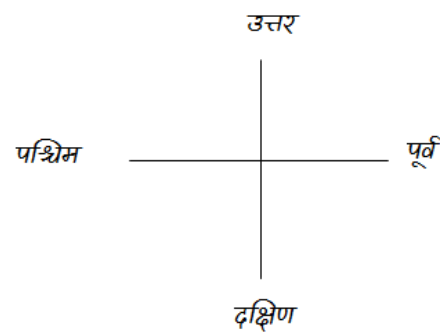
पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट
- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है। इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं।

मोहनजोदड़ों	हड़प्पा
चन्हूदड़ों	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	रहमान टेरी
आमरी	गुमला
अलीमुराद	जलीलपुर

• भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- **हरियाणा**- राखीगढ़ी, सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** - कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा रोपड़ (स्पनगर) - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा चिनाब नदी के किनारे सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान** - कालीबंगा, बालाथल तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर सभ्यता का पूर्वी स्थल
 - माण्डी
 - बड़गाँव
 - हलास
 - सनौली
- **गुजरात**
 - **धौलावीरा**, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, लोथल, रोजदिख्वी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार
 - **महाराष्ट्र**- दैमाबाद सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
 - फैलाव- त्रिभुजाकार
 - क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलोमीटर



स्थल	नदियों के नाम	उत्खनन का वर्ष	उत्खननकर्ता	वर्तमान स्थिति
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ों	सिन्धु	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्धु प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटदीजी	सिन्धु	1955	फजल अहमद	सिन्धु प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)
रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ जिला (भारत)
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद जिला (भारत).
आलमगीरपुर	हिंडन	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)
बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ : विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धौलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविन्द्र नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।
- सिन्धु सभ्यता के 7 नगर
 - हड़प्पा
 - बनावली
 - मोहनजोदड़ों
 - धौलावीरा
 - चन्हूदड़ों
 - लोथल
 - कालीबंगा

महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं

- **हड़प्पा**
रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज दयाराम साहनी ने की थी।
खोज- वर्ष 1921 में

उत्खनन-

- i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा।
- ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
- iii. 1996 में मार्टीयर हीलर द्वारा
 - हड़प्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
 - इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
 - **पिगट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की जुड़वा राजधानी कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है।**
 - 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम हीलर ने MOUND-AB दिया।
 - हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है।

- हड़प्पा से प्राप्त कब्रिस्तान को R-37 नाम दिया।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं।
पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हड़प्पा के अवशेषों में दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रश्न- हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा जोड़ा सही नहीं है?

- ई. जे. एच. मैके - सुमेर से लोगों का पलायन
- मार्टीमर व्हीलर - पश्चिमी एशिया से सभ्यता के विचार का प्रवसन
- अमलानन्द घोष - हड़प्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता से हुआ
- एम.आर. रफीक. मुगल - हड़प्पा सभ्यताने मेसोपोटामिया सभ्यता से प्रेरणा ली।

उत्तर - D

मोहनजोदड़ों

- सिन्धु नदी के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में राखलदास बनर्जी ने की थी।
- उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)
- मार्शल
- जे.एच. मैके
- जे.एफ. डेल्स
- हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदड़ों का नगर कच्ची ईंटों के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ों को स्तूपों का शहर भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले चाँदी के दो सिक्के मिले हैं।
- वस्त्र निर्माण का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।

- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है। (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक 20 खम्भों वाला सभाभवन मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं।
- बड़ी संख्या में कुओं की प्राप्ति।
- 8 कक्षों वाला विशाल स्नानागार भी यहीं से प्राप्त हुआ है।
मार्शल- आश्चर्यजनक निर्माण

कालीबंगा-

- खोज अमलानन्द घोष द्वारा गंगानगर में
- सरस्वती नदी (वर्तमान घग्घर के तट पर)
- कालीबंगा वर्तमान में हनुमानगढ़ में है।
- उत्खनन - बी.बी लाल 1953 में
वी. के. थापड़
- कालीबंगा - काले रंग की चूड़ियाँ
- कालीबंगा - सैधव सभ्यता की तीसरी राजधानी है।
- एक साथ दो फसलों की बुवाई तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण है।
- सड़कों को पक्का बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त हुआ है।
- युग्म शवाधान का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहाँ से प्राप्त हुए हैं।
- भूकम्प आने के प्राचीनतम प्रमाण यहीं से प्राप्त हुए हैं।
- वृषभ की ताम्रमूर्ति भी कालीबंगा से प्राप्त हुई है।
- यहाँ से प्राप्त लेखयुक्त बर्तन से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।

चन्हूदड़ों-

- खोज- एन. जी. मजूमदार - सिन्धु तट पर डकैतों ने हत्या कर दी।
- उत्खनन - मैके ने किया।
- सिन्धु सभ्यता का यह औद्योगिक शहर था।
- यहाँ मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप के बटखड़े बनाने का काम होता था।

अध्याय - 2

प्राचीन एवं मध्य कालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन

- नये धार्मिक विचार-
आजीवक सम्प्रदाय
- आजीवक या आजीविक सम्प्रदाय दुनिया की प्राचीन दर्शन परम्परा में भारतीय जमीन पर विकसित प्रथम नास्तिकवादी या भौतिकवादी सम्प्रदाय था।
- इसकी स्थापना मक्खलिपुत्र गौशाल द्वारा की गयी थी।
- ऐसा माना जाता है कि मक्खलिपुत्र गौशाल पहले महावीर के शिष्य थे, किन्तु बाद में मतभेद हो जाने पर उन्होंने महावीर का साथ छोड़ दिया तथा आजीवक नामक स्वतंत्र सम्प्रदाय की स्थापना की।
- आजीवक सम्प्रदाय लगभग 1002 ई. तक बना रहा।
- इनका मत नियतिवाद या भाग्यवाद पर आधारित था। जिसके अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु भाग्य द्वारा पूर्व नियंत्रित एवं संचालित होती है।
- इनके अनुसार मनुष्य के जीवन पर उसके कर्मों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- महावीर के समान गौशाल भी ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते थे। तथा जीव और पदार्थ को अलग-अलग तत्व मानते थे।
- इस सम्प्रदाय के स्वयं के कोई ग्रंथ या अभिलेख वर्तमान में प्राप्त नहीं हैं।
- इस सम्प्रदाय का उल्लेख तत्कालीन धर्मग्रंथों तथा अशोक के अभिलेखों के आलावा मध्यकाल के स्त्रोतों तक में मिलता है।
- ऐसा माना जाता है कि आजीवक सम्प्रदाय के अनुयायी (आजीवक भ्रमण) नग्न रहते थे तथा परिव्राजकों अर्थात् सन्यासियों की भांति घूमते थे। ईश्वर पुनर्जन्म और कर्म अर्थात् कर्मकाण्ड में इनका विश्वास नहीं था।
- ये जाति व्यवस्था के घोर विरोधी थे और समानता पर जोर देते थे।
- आजीवक सम्प्रदाय का तत्कालीन जनमानस और राज्यसत्ता पर काफी गहरा प्रभाव था।
- अशोक और उसके पोते दशरथ नए बिहार के जहानाबाद (पुराना "गया", जिला) स्थित बराबर

की पहाड़ियों में सात गुफाओं का निर्माण कर उन्हें आजीवकों को समर्पित किया था।

जैन व बौद्ध धर्म

उदय के कारण→

- छठी शताब्दी ई.पू. में वैदिक संस्कृति कर्मकाण्डों व आडम्बरों से ग्रसित हो गई।
- परिणाम सामाजिक कुरीतियों
- समाज में ऊँच-नीच जात-पात का भेदभाव बढ़ने लगा।
- जनता में असंतोष बढ़ा।
- **मध्य गंगा घाटी में** इसी समय 62 सम्प्रदायों का उदय हुआ। उनमें **जैन और बौद्ध** सम्प्रदाय प्रमुख थे।

• बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के **संस्थापक गौतम बुद्ध** थे। सिद्धार्थ-बचपन का नाम - सिद्धि प्राप्त करने के लिए जन्म लेने वाला।
- जन्म 563 ई.पू. - लुम्बिनी (नेपाल)
- कुल- शाक्य (क्षत्रिय कुल)
- बुद्ध की माता - महामाया
- बुद्ध की माता की मृत्यु के बाद पालन पोषण महाप्रजापति गौतमी ने किया था।
- पिता - शुद्धोधन
- बुद्ध का विवाह - यशोधरा से बुद्ध के पुत्र का नाम राहुल था।

महाभिनिष्क्रमण

- 29 वर्ष की आयु में
- सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया था।
- अनोमा नदी के तट पर सिर मुण्डन
- काषाय वस्त्र धारण किये।
- प्रथम गुरु आलार कलाम थे।
- सांख्य दर्शन के आचार्य
- बाद में उरुवेला (बोधगया) प्रस्थान
- यहाँ पांच साधक मिले।
- इनमें कौण्डिय प्रमुख थे।

ज्ञान प्राप्ति -

- 35 वर्ष की आयु में - बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- **वैशाख पूर्णिमा को पीपल के वृक्ष के नीचे निरंजना नदी (पुनपुन) के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई।**

- इसी दिन से **गौतम बुद्ध** तथागत कहलाये तथा गौतम बुद्ध नाम भी यही से हुआ। जिसने सत्य को प्राप्त कर लिया।
- धर्मचक्र प्रवर्तन-** सारनाथ में
- बोधगया से सारनाथ आये
- प्रथम उपदेश दिया-5 ब्राह्मण सन्यासियों को मागधी भाषा में।
- गौतम बुद्ध का बौद्ध संघ में प्रवेश हुआ।
- सर्वप्रथम अनुयायी -
 तपस्स जाट शुद्ध
 कालिक }
- प्रिय शिष्य- आनन्द
- बौद्ध धर्म की प्रथम महिला भिक्षु - गौतमी (बुद्ध की माँसी)**
- अन्तिम उपदेश**
- कुशीनारा में सुभच्छ को दिया
- हिरण्यवती नदी तट पर
- महापरिनिर्वाण (मृत्यु)**
- कुशीनारा में 483 ई.पू.
- 80 वर्ष की आयु में
- बुद्ध के अवशेष 8 भागों में डाले गये जहाँ स्तूप बनाये गये।
- वैशाख पूर्णिमा का महत्व**
- वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा भी कहते हैं।
- गौतम बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति
- महापरिनिर्वाण - वैशाख पूर्णिमा को अपवाद-महाभिनिष्क्रमण
- गौतम बुद्ध में 32 महापुरुषों के लक्षण बताये गये हैं।
- बुद्ध के प्रमुख वचन**
- जीवन कष्टों से भरा है।
- लिप्सा तृष्णा का ही दूसरा रूप है।
- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न**
- बुद्ध, धम्म, संघ
- बुद्ध के चार आर्य सत्य**
- 1. दुःख
- 2. दुःख समुदाय
- 3. दुःख निरोध (निवारण)
- 4. प्रतिपदा
- इन्हीं का कालान्तर में विस्तार होकर ये **अष्टांगिक मार्ग** कहलाये।
- भिक्षुओं का कल्याण मित्र

अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक दृष्टि
 2. सम्यक संकल्प
 3. सम्यक वाणी
 4. सम्यक कर्मान्त
 5. सम्यक आजीव
 6. सम्यक व्यायाम
 7. सम्यक स्मृति
 8. सम्यक समाधि
- समाधि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति।
 - जीवन-मरण चक्र से मुक्ति

बौद्ध धर्म

- अनीश्वरवादी
- पुनर्जन्म में विश्वास
- अनात्मवादी धर्म

बौद्ध धर्म के प्रतीक

- जन्म - कमल व साण्ड
 गृहत्याग - घोड़ा
 ज्ञान - पीपल
 निर्वाण - पदचिन्ह
 मृत्यु - स्तूप

- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक विस्तार कोशल राज्य में।
- बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये गये।
- बौद्ध धर्म के प्रचार केन्द्र - मगध

बौद्ध संगीतियां

1. 483 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में अजातशत्रु के राजगृह में रचना रची गयी।
 सुत्तपिटक विनयपिटक
 (बुद्ध के उपदेश) (संघ के नियम)
 अध्यक्ष - महाकस्सप
2. 383 ई.पू. संरक्षक - कालाशोक
 वैशाली में - भिक्षुओं में मतभेद
 अध्यक्ष - सर्वकामिनी
3. 250 / 251 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में -
 अशोक
 पाटलिपुत्र में रचना रची गयी
 अभिधम्मपिटक
 (बुद्ध के दार्शनिक विचार)

अध्यक्ष - मोगगलिपुत्त तिस्स

4. प्रथम शताब्दी संरक्षक - कनिष्क
 कुण्डलवन में हीनयान व महायान
 (कश्मीर) (सम्प्रदाय में बंटा)

अध्यक्ष - वसुमित्र

- विहार - बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान
- चैत्य - पूजास्थल

बौद्ध धर्म को अपनाते वाले प्रमुख शासक

- बिम्बिसार - बुद्ध का मित्र
- प्रसेनजीत
- उदायिन
- अशोक - महेन्द्र (पुत्र), संघमित्रा(पुत्री)
- बौद्ध धर्म का प्रचार करने श्रीलंका गये।

नालन्दा विश्वविद्यालय

- गुप्त शासक कुमारगुप्त ने बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए स्थापित किया।
- बौद्ध धर्म का अध्ययन करने हेतु आये।
- फाह्यान, हेनसांग (चीनी यात्री)।
- अजातशत्रु प्रारम्भ में जैनधर्म का अनुयायी था बाद में बौद्ध धर्म का अनुयायी बना।

बौद्ध धर्म की प्रमुख महिला अनुयायी

- गाँतमी
- नंदा
- मल्लिका
- खेमा
- विशाखा
- यशोधरा
- आम्रपाली
- सुप्रवासा

बौद्ध धर्म के प्रतीक महात्मा बुद्ध के प्रमुख आठ स्थान

- लुम्बिनी
- बोधगया
- सारनाथ
- कुशीनगर
- वैशाली
- राजगृह
- श्रावस्ती
- संकाश्य

- बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का आदर्श बोधिसत्व हैं। बोधिसत्व दूसरे के कल्याण को प्राथमिकता देते हुए अपने निर्वाण में विलंभ करते हैं।
- हीनयान का आदर्श अर्हत पद को प्राप्त करना है। जो व्यक्ति अपनी साधना से निर्वाण की प्राप्ति करते हैं उन्हें ही अर्हत कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म के बारे में हमें विशद ज्ञान त्रिपिटक (विनयपिटक, सूत्रपिटक, अभिधम्मपिटक से प्राप्त होता है। इन तीनों पिटकों की भाषा पाली है।
- पालि पिटक सबसे पुराना है।
- बुद्ध के जन्म एवं मृत्यु की तिथि को चीनी परम्परा के कैंटोन अभिलेख के आधार पर निश्चित किया गया है।
- पालि त्रिपिटकों को पहली शताब्दी ईसा पूर्व में श्रीलंका के शासक वत्तगामिनी की देख-रेख में पहली बार लिपिबद्ध किया गया।
- सूत्रपिटक के पांच निकाय हैं - दीर्घ, मज्झिम, संयुक्त, अगुत्तर, खुद्दक।
- बुद्ध के पूर्व जन्मों से जुड़ी जातक कथाएँ खुद्दक निकाय की 15 पुस्तकों में से एक हैं। खुद्दक निकाय में धम्मपद (नैतिक उपदेशों का पधात्मक संकलन थेरगाथा (बौद्ध भिक्षुओं का गीत) और थेरीगाथा (बौद्ध भिक्षुणियों के गीत) हैं।
- बौद्धधर्म मूलतः अनीश्वरवादी है। इसमें आत्मा की परिकल्पना भी नहीं है।
- तृष्णा के क्षीण हो जाने की अवस्था को ही बुद्ध ने निर्वाण कहा है।
- विश्व दुखों से भरा है का सिद्धांत बुद्ध ने उपनिषद् से लिया।
- उपासक: गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए बौद्ध धर्म को अपनाते वालों को उपासक कहा गया है।
- बौद्धसंघ में सम्मिलित होने के लिए न्यूनतम आयु सीमा 15 वर्ष थी। बौद्ध संघ में प्रविष्ट होने वाले को उपसम्पदा कहा जाता था।
- सर्वाधिक बुद्ध मूर्तियों का निर्माण गंधार शैली के अंतर्गत किया गया लेकिन बुद्ध की प्रथम मूर्ति संभवतः मथुरा कला के अंतर्गत बनी थी।
- भारत में उपासना की जाने वाली प्रथम मूर्ति संभवतः बुद्ध की थी।
भारत के महत्त्वपूर्ण बौद्ध मठ

मठ	स्थान	राज्य केन्द्र शासित प्रदेश	थिकसे मठ	लद्दाख	जम्मू कश्मीर
टाबो मठ/ ताबो मठ	ताबो गाँव लाहौल (स्पीति घाटी)	हिमाचल प्रदेश	शासुर मठ	लाहुल स्पीति	हिमाचल प्रदेश
नामग्याल मठ	धर्मशाला	हिमाचल प्रदेश	माइंजोलिंग मठ	देहरादून	उत्तराखण्ड
हेमिस मठ	लद्दाख	जम्मू कश्मीर	स्मटेक मठ	गंगटोक	सिक्किम
			तवांग मठ	अरुणाचल प्रदेश	अरुणाचल प्रदेश
			नामझालिंग मठ	मैसूर	कर्नाटक
			बोधिमडा मठ	बोधगया	बिहार

बौद्ध संगीति

क्रम-	समय	स्थान	अध्यक्ष	तत्कालीन शासक	कार्य/निर्णय/विशेषता
प्रथम संगीति	483 ई.पू.	सप्तपर्णि गुफा (राजगृह)	महाकस्सप	अजातशत्रु (हर्यक वंश)	बुद्ध के उपदेशों का सुत्तपिटक तथा विनय-पिटक में अलग-अलग संकलित किया गया सुत्तपिटक (धार्मिक संभाषण और बुद्ध के संवादों का संकलन) तथा विनयपिटक (संघ जीवन में भिक्षुओं के नियम) त्रिपिटक (बुद्ध के उपदेशों का संकलन) के अभिन्न अंग हैं।
द्वितीय संगीति	383 ई.पू.	वैशाली	साबकमीर (सुबुकामी)/ सर्वकामिनी	कालाशोक (शिशुनाग वंश)	भिक्षुओं में मतभेद के कारण बौद्धसंघ में विभाजन-(1) स्थविर, (2) महासघिक
तृतीय संगीति	250/251 ई.पू.	पाटलिपुत्र	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अशोक (मौर्य वंश)	अभिधम्म पिटक (दार्शनिकसिद्धांत) का संकलन
चतुर्थ संगीति	प्रथम शताब्दी ईस्वी	कुंडलवन (कश्मीर)	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)	कनिष्क (कुषाण वंश)	बौद्ध धर्म का विभाजन-(1) हीनयान, (2) महायान

बौद्ध धर्म की उपादेयता और प्रभाव (Usability and impact of Buddhism)

1. आर्थिक क्षेत्र में (In Economic Realm)

- लोहे के तख्ता वाले हल से खेती, व्यापार और सिक्कों के प्रचलन से व्यापारियों और अमीरों को धन संचित करने का मौका मिला। लेकिन बौद्ध धर्म ने घोषणा की कि धन संचित नहीं करना चाहिए, क्योंकि धन दरिद्रता, घृणा कूरता और हिंसा का जनक है।
- इन बुराइयों को दूर करने के लिए भगवान बुद्ध ने उपदेश दिया कि किसानों को बीज और अन्य

सुविधाएँ और श्रमिकों को मजदूरी मिलनी चाहिए तथा इन उपायों की अनुशंसा सांसारिक दरिद्रता को दूर करने के लिये की गई।

- संघ में कर्जदारों का प्रवेश वर्जित कर दिया गया। इससे स्पष्ट महाजनों और धनवानों को लाभ हुआ क्योंकि कर्जदार अब बिना कर्ज चुकाए संघ में शामिल नहीं हो सकते थे।
- संघ में दासों का प्रवेश निषेध था। यदि उन्हें प्रवेश मिलता तो कृषि में गिरावट होती क्योंकि ज्यादातर दास कृषि क्षेत्रों से ही जुड़े हुए थे।

कृष्ण भक्ति

चैतन्य को इनके अनुयायी कृष्ण का अवतार भी मानते रहे हैं। सन् 1509 में जब ये अपने पिता का श्राद्ध करने बिहार के गया नगर में गए, तब वहां इनकी मुलाकात ईश्वरपुरी नामक संत से हुई। उन्होंने निमाई से 'कृष्ण-कृष्ण' रटने को कहा। तभी से इनका सारा जीवन बदल गया और ये हर समय भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन रहने लगे। भगवान श्रीकृष्ण के प्रति इनकी अनन्य निष्ठा व विश्वास के कारण इनके असंख्य अनुयायी हो गए। सर्वप्रथम नित्यानंद प्रभु व अद्वैताचार्य महाराज इनके शिष्य बने। इन दोनों ने निमाई के भक्ति आंदोलन को तीव्र गति प्रदान की। निमाई ने अपने इन दोनों शिष्यों के सहयोग से ढोलक, मृदंग, झाँझ, मंजीरे आदि वाद्य यंत्र बजाकर व उच्च स्वर में नाच-गाकर 'हरि नाम संकीर्तन' करना प्रारंभ किया।

नामदेव जी

नामदेव का भक्ति आंदोलन में योगदान

बंगाल के ही समान महाराष्ट्र में भी भक्ति आंदोलन का प्रचार हुआ। यहाँ के मध्ययुगीन सुधारकों में नामदेव का नाम उल्लेखनीय है। उनका जन्म 1270 ई. में सतारा जिले में कन्हाड के समीप नरसीबमनी गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम दामाशेट तथा माता का नाम जोनाबाई था। वे छिपी जाति के थे। नामदेव को भक्ति की प्रेरणा अपने पिता से ही मिली थी। उन्होंने अपना बचपन साधुओं की सेवा तथा सत्संग में व्यतीत किया।

संत विमोवा खेचर उनके गुरु थे। संत ज्ञानेश्वर के प्रति उनके मन में बड़ा सम्मान था। ज्ञानेश्वर के साथ उन्होंने कई स्थानों का भ्रमण किया तथा साधु-संतों से परिचय प्राप्त किया। उनकी मृत्यु के बाद नामदेव महाराष्ट्र छोड़कर पंजाब के गुरुदासपुर जिले में स्थित घोमन नामक गाँव में जाकर बस गये। यहीं से उन्होंने अपने मत का प्रचार किया। हिन्दू तथा सिख दोनों ही उनके भक्त बन गये। नामदेव भी निरगुणवादी थे। उन्होंने मूर्ति-पूजा तथा धर्म के बाह्याडंबरों का विरोध करते हुये प्रेम, भक्ति एवं समानता का उपदेश दिया। उनका कहना था, कि परमात्मा ही सब कुछ है। उसके अलावा कोई दूसरी सत्ता नहीं है। वहीं सभी में व्याप्त है। अतः एकान्त में उसी का ध्यान करना चाहिए। भक्ति को उन्होंने

मोक्ष का साधन स्वीकार किया। नामदेव की एक भक्त के रूप में महाराष्ट्र तथा उत्तर भारत में इतनी अधिक प्रतिष्ठा थी, की कबीर ने भी आदरपूर्वक उनका स्मरण किया है। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के भी समर्थक थे। सभी जातियों के लोगों को उन्होंने अपना अनुयायी बनाया। वे मराठी भाषा तथा साहित्य के प्रमुख कवि थे। मराठी भाषा के माध्यम से उन्होंने महाराष्ट्र की जनता में एक नई चेतना जगाई।

चार्वाक दर्शन (भौतिकवाद)

चार्वाक दर्शन एक प्राचीन भारतीय भौतिकवादी नास्तिक दर्शन है। यह मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है तथा यह सिद्धांत पारलौकिक सत्ताओं को स्वीकार नहीं करता है। इसके दर्शन प्रवर्तक चार्वाक ऋषि थे।

इस दर्शन को वेदबाह्य (चार्वाक, माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक, वैभाषिक, और आर्हत(जैन) भी कहा जाता है।

चार्वाक सिद्धांतों के लिए बौद्ध पिटकों में 'लोकायत' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका मतलब 'दर्शन की वह प्रणाली है, जो इस लोक में विश्वास करती है लेकिन स्वर्ग, नरक अथवा मुक्ति की अवधारणा में विश्वास नहीं रखती है।

चार्वाक दर्शन के अनुसार पृथ्वी, जल, तेज तथा वायु ये चार ही तत्त्व सृष्टि के मूल कारण हैं। उनके मत में आकाश नामक कोई तत्त्व है ही नहीं।

इस दर्शन में कहा गया है, कि "यावज्जीवेत सुखं जीवेद् ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत, भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः"

अर्थात् जब तक जीना है, सुख से जीना चाहिये, अगर अपने पास साधन नहीं हैं, तो दूसरे से उधार लेकर सुख से रहना चाहिए, शमशान में शरीर के जलने के बाद शरीर वापस कहाँ आता है?

चार्वाक दर्शन के प्रमुख मत-

सुखवाद- सर्वदर्शनसंग्रह में चार्वाक के मतानुसार सुख को ही इस जीवन का मुख्य लक्ष्य बताया गया है।

अनात्मवाद- चार्वाक आत्मा को पृथक् कोई पदार्थ नहीं मानते हैं। उनके अनुसार शरीर ही आत्मा है। इसकी सिद्धि के तीन प्रकार हैं- तर्क, अनुभव और आयुर्वेद शास्त्र।

तर्क से आत्मा की सिद्धि के लिये चार्वाक लोग कहते हैं कि शरीर के रहने पर चैतन्य रहता है और शरीर के न रहने पर चैतन्य नहीं रहता। इस प्रकार शरीर ही चैतन्य का आधार अर्थात् आत्मा है यह सिद्ध होता है।

अनुभव 'मैं स्थूल हूँ, 'मैं दुर्बल हूँ, 'मैं गोरा हूँ, 'मैं निष्क्रिय हूँ इत्यादि अनुभव हमें पग-पग पर होता है। स्थूलता दुर्बलता इत्यादि शरीर के धर्म हैं और 'मैं' भी वही है। अतः शरीर ही आत्मा है।

आयुर्वेद जिस प्रकार गुड़, जौ, महुआ आदि को मिला देने से काल क्रम के अनुसार उस मिश्रण में मद्य उत्पन्न होती है, अथवा दही, पीली मिट्टी और गोबर के परस्पर मिश्रण से उसमें बिच्छू पैदा हो जाता है उसी प्रकार चतुर्भूतों (पृथ्वी, जल, तेज और वायु) के विशिष्ट सम्मिश्रण से चैतन्य (चेतना) उत्पन्न हो जाता है।

धर्म दर्शन

सांख्य दर्शन

भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन प्राचीनतम दर्शन है। इस दर्शन के प्रवर्तक "महर्षि कपिल" हैं। आचार्य गौतम बुद्ध ने भी सांख्य दर्शन का अध्ययन किया। क्योंकि उनके गुरु आलार कलाम सांख्य दर्शन के विद्वान थे। उन्होंने गौतम बुद्ध को सांख्य का उपदेश दिया। जिससे उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ और वह घर त्याग कर चले गए।

सांख्य दर्शन मुख्यतः दो (2) तत्वों को मानता है। 1. प्रकृति 2. पुरुष इन दो तत्वों से ही सांख्य दर्शन के अन्य (23) तत्वों की उत्पत्ति होती है। सांख्य में प्रकृति को अचेतन कहा गया है और वही पुरुष को चेतन। जब पुरुष का प्रतिबिंब (छाया) प्रकृति के ऊपर पड़ता है। तब सृष्टि प्रक्रिया आरंभ होती है। यह सांख्य दर्शन का मत है।

सांख्य दर्शन में तत्त्व

सांख्य दर्शन में 25 तत्व हैं। इन तत्वों का सम्यक् ज्ञान जीव को जन्म-मरण के बंधन से मुक्त करता है। सांख्य का अर्थ ही है- तत्वों का ज्ञान। जिससे जीव मुक्ति पा सके। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने सांख्य दर्शन का उपदेश अर्जुन को दिया। सांख्य दर्शन के विभिन्न आचार्य हुए। लेकिन आज के समय में सांख्य दर्शन का जो प्रामाणिक ग्रंथ मिलता है।

वह ग्रंथ है- "सांख्य-कारिका"। इसका श्रेय आचार्य ईश्वर कृष्ण को जाता है।

ईश्वर कृष्ण ने अपनी सांख्यकारिका में आचार्य कपिल के सूत्रों (सांख्यसूत्र) को कारिका बद्ध करके पाठकों के लिए सहज और अर्थ दृष्टि से भी सरल बनाया है। सांख्य-कारिका विभिन्न लेखकों, संपादकों द्वारा रचित है। लेकिन डॉ. विमला कर्नाटका द्वारा लिखित सांख्य-कारिका प्रचलित तथा बोधगम्य है।

सांख्य के 25 तत्वों का विवरण -

सांख्य दर्शन में क्रमशः 25 तत्व माने गए हैं। पच्चीस तत्व हैं- प्रकृति, पुरुष, महत् (बुद्धि), अहंकार, पंच ज्ञानेन्द्रिय (चक्षु, श्रोत, रसना, घ्राण, त्वक्), पंच कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाद, पाणि, पायु, उपस्थ), मन, पंच- तंमात्र (रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श) पंच- महाभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश)।

सांख्य दर्शन सूत्रबद्ध होने की वजह से पढ़ने में कठिन था। लेकिन उसका कारिकाबद्ध होने से पढ़ने में सुविधा हुई। जब तक सांख्य दर्शन सूत्रों में था, तब तक उसे कुछ विद्वान ही पढ़ पाते थे। लेकिन सूत्र से कारिका और कारिका से तत्त्व-कौमुदी के विकास ने सांख्य दर्शन को जीवित कर दिया और उसको अनेक विद्वान व छात्र सहर्ष पढ़ने लगे।

सांख्य दर्शन का प्रमुख सिद्धांत -

सांख्य का मुख्य सिद्धांत सत्कार्यवाद है। जिससे सत् से सत् की उत्पत्ति आदि पांच हेतु माने गए हैं। सांख्य दर्शन ईश्वर को नहीं मानता, इसीलिए इसे निरीश्वरवाद भी कहते हैं। यह दर्शन पुरुष को आत्मा और प्रकृति को माया आदि नामों से पुकारा जाता है।

सांख्य दर्शन का सर्वोत्कृष्ट तत्व बुद्धि को माना गया है। जिसे हम महत् के नाम से भी जानते हैं। क्योंकि बुद्धि के द्वारा ही हमें सत्य और असत्य का भान होता है। इसीलिए इसे विवेकी भी कहा गया है। सांख्य में बुद्धि के 8 धर्म बताये गए हैं- धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य एवं अनैश्वर्य। बुद्धि के यह 8 धर्म ही मनुष्य को सद्गति व अधोगति की ओर ले जाने का कार्य करते हैं।

सांख्य दर्शन शास्त्र में मुक्ति -

सांख्य दर्शन में दो प्रकार की मुक्ति बताई गई है। 1. देह-मुक्ति 2. विदेह-मुक्ति। देह-मुक्ति का तात्पर्य है- शरीर की मुक्ति और विदेह-मुक्ति से तात्पर्य है- जन्म-

अध्याय - 4

प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु

• सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं

नदी की घाटी में कला का उद्भव ईसा पूर्व तीसरी सह शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। इस सभ्यता के विभिन्न स्थलों से कला के जो रूप प्राप्त हुए हैं, उनमें प्रतिमाएँ, मुहरें, मिट्टी के बर्तन, आभूषण, पकी हुई मिट्टी की मूर्तियाँ आदि शामिल हैं। उस समय के कलाकारों में निश्चित रूप से उच्च कोटि की कलात्मक सूझ-बूझ और कल्पनाशक्ति विद्यमान थी।

सिन्धु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख स्थल हड़प्पा और मोहनजोदड़ों नामक दो नगर थे, जिनमें से हड़प्पा उत्तर में और मोहनजोदड़ों दक्षिण में सिन्धु नदी के तट पर बसे हुये थे। ये दोनों नगर सुंदर नगर नियोजन की कला के प्राचीनतम उदाहरण थे। इन नगरों में रहने के मकान, बाजार, भंडार घर, कार्यालय, सार्वजनिक स्नानागार आदि सभी अत्यंत व्यवस्थित रूप से यथास्थान बनाए गए थे। इन नगरों में जल निकासी की व्यवस्था भी काफी विकसित थी। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों इस समय पाकिस्तान में स्थित हैं।

कुछ अन्य महत्वपूर्ण स्थलों से भी हमें कला-वस्तुओं के नमूने मिले हैं, जिनके नाम हैं- लोथल और धौलावीरा (गुजरात), राखीगढ़ी (हरियाणा), रोपड़ (पंजाब) तथा कालीबंगा (राजस्थान)।

पत्थर की मूर्तियाँ

- हड़प्पाई स्थलों पर पाई गई मूर्तियाँ, भले ही वे पत्थर, कांसे या मिट्टी की बनी हों, संख्या की दृष्टि से बहुत अधिक नहीं हैं पर कला की दृष्टि से उच्च कोटि की हैं। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों में पाई गई
- पत्थर की मूर्तियाँ त्रि-आयामी वस्तुएं बनाने का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। पत्थर की मूर्तियों में दो पुरुष प्रतिमाएं बहुचर्चित हैं, जिनमें से एक पुरुष धड़ है, जो लाल चूना पत्थर का बना है और दूसरी दाढ़ी वाले पुरुष की आवक्ष मूर्ति है, जो सेलखड़ी की बनी है।
- दाढ़ी वाले पुरुष को धार्मिक व्यक्ति माना जाता है। इस आवक्ष एक मूर्ति को शॉल ओढ़े हुए दिखाया गया है। शॉल बाएं कंधे के ऊपर से और दाहिनी

भुजा के नीचे से डाली गई है। शॉल त्रिफुलिया नमूनों से सजी हुई है। आँखें कुछ लंबी और आधी बंद दिखाई गई हैं, मानों वह पुरुष ध्यानावस्थित हो।

- कान सीप जैसे दिखाई देते हैं और उनके बीच में छेद हैं। बालों को बीच की मांग के द्वारा दो हिस्सों में बाँटा गया है और सिर के चारों ओर एक सादा बना हुआ फीता बंधा हुआ दिखाया गया है। दाहिनी भुजा पर एक बाजूबंद है और गर्दन के चारों ओर छोटे-छोटे छेद बने हैं जिससे लगता है कि वह हार पहने हुए है।

कांसे की ढलाई

- हड़प्पा के लोग कांसे की ढलाई बड़े पैमाने पर करते थे और इस काम में प्रवीण थे। इनकी कांस्य मूर्तियाँ कांसे को ढालकर बनाई जाती थी। इस तकनीक के अंतर्गत सर्वप्रथम मोम की एक प्रतिमा या मूर्ति बनाई जाती थी।
- इसे चिकनी मिट्टी से पूरी तरह लीपकर सूखने के लिए छोड़ दिया जाता था। जब वह पूरी तरह सूख जाती थी तो उसे गर्म किया जाता था और उसके मिट्टी के आवरण में एक छोटा सा छेद बनाकर उस छेद के रास्ते सारा पिघला हुआ मोम बाहर निकाल दिया जाता था।
- इसके बाद चिकनी मिट्टी के खाली सांचे में उसी छेद के रास्ते पिघली हुई धातु भर दी जाती थी। जब वह धातु ठंडी होकर ठोस हो जाती थी तो चिकनी मिट्टी के आवरण को हटा दिया जाता था।
- कांस्य में मनुष्यों और जानवरों दोनों की ही मूर्तियाँ बनाई गई हैं। मानव मूर्तियों का सर्वोत्तम नमूना है एक लड़की की मूर्ति, जिसे नर्तकी के रूप में जाना जाता है। कांसे की बनी हुई जानवरों की मूर्तियों में भैंस और बकरी की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भैंस का सिर और कमर ऊँची उठी हुई है तथा सींग फैले हुए हैं। सिन्धु सभ्यता के सभी केंद्रों में कांसे की ढलाई का काम बहुतायत में होता था।

मृणमूर्तियाँ (टेराकोटा)

- सिन्धु घाटी के लोग मिट्टी की मूर्तियाँ भी बनाते थे लेकिन वे पत्थर और कांसे की मूर्तियों जितनी बढ़िया नहीं होती थीं। सिन्धु घाटी की मूर्तियों में मातृदेवी की प्रतिमाएं अधिक उल्लेखनीय हैं।
- कालीबंगा और लोथल में पाई गई नारी मूर्तियाँ हड़प्पा और मोहनजोदड़ों में पाई गई मातृदेवी की

मूर्तियों से बहुत ही अलग तरह की हैं। मिट्टी की मूर्तियों में कुछ दाढ़ी-मूँछ वाले ऐसे पुरुषों की भी छोटी-छोटी मूर्तियाँ पाई गई हैं, जिनके बाल गुंथे हुए (कुंडलित) हैं, जो एकदम सीधे खड़े हुए हैं, टांगें थोड़ी चौड़ी हैं और भुजाएँ शरीर के समानांतर नीचे की ओर लटकी हुई हैं।

- ठीक ऐसी ही मुद्रा में मूर्तियाँ बार-बार पाई गई हैं, जिससे यह प्रतीत होता है कि ये किसी देवता की मूर्तियाँ हैं। एक सींग वाले देवता का मिट्टी का बना मुखांटा भी मिला है। इनके अलावा, मिट्टी की बनी पहिएदार गाड़ियाँ, छकड़े, सीटियाँ, पशु-पक्षियों की आकृतियाँ, खेलने के पासे, गिट्टियाँ, चक्रिका (डिस्क) भी मिली हैं।

मुद्राएँ (मुहरें)

- पुरातत्वविदों को हज़ारों की संख्या में मुहरें (मुद्राएँ) मिली हैं, जो आमतौर पर सेलखड़ी और कभी-कभी गोमेद, चकमक पत्थर, तांबा, कांस्य और मिट्टी से बनाई गई थीं। उन पर एक सींग वाले साँड़, गैंडा, बाघ, हाथी, जंगली भैंसा, बकरा, भैंसा आदि पशुओं की सुंदर आकृतियाँ बनी हुई थीं।
- इन आकृतियों में प्रदर्शित विभिन्न स्वाभाविक मनोभावों की अभिव्यक्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन मुद्राओं को तैयार करने का उद्देश्य मुख्यतः वाणिज्यिक था। ऐसा प्रतीत होता है कि ये मुद्राएँ बाज़ूबंद के तौर पर भी कुछ लोगों द्वारा पहनी जाती थीं जिनसे उन व्यक्तियों की पहचान की जा सकती थी, जैसे कि आजकल लोग पहचान पत्र धारण करते हैं।
- हड़प्पा की मानक मुद्रा 2x2 इंच की वर्गाकार पटिया होती थी, जो आमतौर पर सेलखड़ी से बनाई जाती थी। प्रत्येक मुद्रा में एक चित्रात्मक लिपि खुदी होती थी जो अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। कुछ मुद्राएँ हाथीदांत की भी पाई गई हैं।
- मुद्राओं के डिज़ाइन अनेक प्रकार के होते थे पर अधिकांश में कोई जानवर, जैसे कि कूबड़दार या बिना कूबड़ वाला साँड़, हाथी, बाघ, बकरे और दैत्याकार जानवर बने होते हैं।
- उनमें कहीं-कहीं पेड़ों और मानवों की आकृतियाँ भी बनी पाई गई हैं। इनमें सबसे अधिक उल्लेखनीय एक ऐसी मुद्रा है जिसके केंद्र में एक मानव आकृति और उसके चारों ओर कई जानवर बने हैं। इस मुद्रा को कुछ विद्वानों द्वारा पशुपति मुद्रा

कहा जाता है (आकार 1/2 से 2 इंच तक के वर्ग या आयत के रूप में) जबकि कुछ अन्य इसे किसी देवी की आकृति मानते हैं। इस मुद्रा में एक मानव आकृति पालथी मारकर बैठी हुई दिखाई गई है।

- इस मानव आकृति के दाहिनी ओर एक हाथी और एक बाघ (शेर) हैं जबकि बाँयी ओर एक गैंडा और भैंसा दिखाए गए हैं। इन पशुओं के अलावा, स्तूल के नीचे दो बारहसिंगे हैं। इस तरह की मुद्राएँ 2500-1900 ई. पू. की हैं और ये सिन्धु घाटी के प्राचीन नगर मोहनजोदड़ों जैसे अनेक पुरास्थलों पर बड़ी संख्या में पाई गई हैं। इनकी सतहों पर मानव और पशु आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं।
- इन मुद्राओं के अलावा, तांबे की वर्गाकार या आयताकार पट्टियाँ (टैबलेट) पाई गई हैं, जिनमें एक ओर मानव आकृति और दूसरी ओर कोई अभिलेख अथवा दोनों ओर ही कोई अभिलेख है। इन पट्टियों पर आकृतियाँ और अभिलेख किसी नोकदार औंजार (छेनी) से सावधानीपूर्वक काटकर अंकित किए गए हैं। मृद्भाण्ड
- इन पुरास्थलों से बड़ी संख्या में प्राप्त मृद्भाण्डों (मिट्टी के बर्तनों) की शकल सूत्र तथा उन्हें बनाने की शैलियों से हमें तत्कालीन डिज़ाइनों के भिन्न-भिन्न रूपों तथा विषयों के विकास का पता चलता है।
- सिन्धु घाटी में पाए गए मिट्टी के बर्तन अधिकतर कुम्हार की चाक पर बनाए गए बर्तन हैं, हाथ से बनाए गए बर्तन नहीं।
- इनमें रंग किए हुए बर्तन कम और सादे बर्तन अधिक हैं। ये सादे बर्तन आमतौर पर लाल चिकनी मिट्टी के बने हैं। इनमें से कुछ पर सुंदर लाल या स्लेटी लेप लगी है। कुछ घुंडीदार पात्र हैं, जो घुंडियों की पंक्तियों से सजे हैं।
- काले रंगीन बर्तनों पर लाल लेप की एक सुंदर परत है, जिस पर चमकीले काले रंग से ज्यामितीय आकृतियाँ और पशुओं के डिज़ाइन बने हैं।
- बहुरंगी मृद्भाण्ड बहुत कम पाए गए हैं। इनमें मुख्यतः छोटे-छोटे कलश शामिल हैं जिन पर लाल, काले, हरे और कभी-कभार सफ़ेद तथा पीले रंगों में ज्यामितीय आकृतियाँ बनी हुई हैं। उत्कीर्णित बर्तन भी बहुत कम पाए गए हैं, और जो पाए गए हैं उनमें उत्कीर्णन की सजावट पेंदे पर और बलि-स्तंभ की तश्तरियों तक ही सीमित थी।

‘कंदारिया महादेव मंदिर’ है। खजुराहो के मंदिरों को 1986 ई। में युनेस्को ने ‘विश्व विरासत स्थल’ का दर्जा प्रदान किया था।

- खजुराहो के मंदिर भारतीय स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण हैं, जिनका निर्माण तत्कालीन चंदेल वंश के शासकों ने किया था। इन मंदिरों को ‘विश्व विरासत स्थल’ का दर्जा प्रदान किया जाना इनके कलात्मक महत्व को दर्शाता है।

खजुराहो मंदिर से संबन्धित तथ्य :

- I) खजुराहो हिन्दू व जैन मंदिरों का समूह है, जो मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है।
- II) चौंसठ योगिनी मंदिर, ब्रह्मा एवं महादेव मंदिर ग्रेनाइट पत्थर से और शेष मंदिर गुलाबी अथवा हल्के पीले रंग के दानेदार बलुआ पत्थर से बने हैं।
- III) खजुराहो मंदिर मध्य भारत की विंध्य पर्वतश्रेणी में अवस्थित है।
- IV) खजुराहो के मंदिरों का निर्माण चंदेल वंश के शासकों द्वारा 900 से 1130 ई। के मध्य किया गया था।
- V) इन मंदिरों को 1986 ई। में युनेस्को ने ‘विश्व विरासत स्थल’ का दर्जा प्रदान किया था।
- VI) खजुराहो के मंदिरों का निर्माण ग्रेनाइट की नींव, जोकि दिखाई नहीं देती है, पर बलुआ पत्थर से किया गया है।
- VII) ये मंदिर अपनी नागर स्थापत्य शैली और कामुक मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- VIII) खजुराहो मंदिरों का संबंध वैष्णव धर्म, शैव धर्म और जैन धर्म से है।
- IX) ऐसा माना जाता है कि हर चंदेल शासक ने अपने शासनकाल में कम से कम एक मंदिर अवश्य बनवाया था। इसीलिए खजुराहो के मंदिरों का निर्माण किसी एक शासक के काल में नहीं हुआ है। वास्तव में मंदिरों का निर्माण, निर्माण से अधिक चंदेल वंश के शासकों के लिए एक परम्परा बन गई थी।
- X) यशोवर्मन (954 ई।) ने ‘विष्णु मंदिर’ बनवाया था, जिसे अब ‘लक्ष्मण मंदिर’ के नाम से जाना जाता है। यह अपने समय का अलंकृत और सुस्पष्ट उदाहरण है, जो चंदेल राजपूतों की प्रतिष्ठा को प्रमाणित करता है।

XI) स्थानीय परम्परा के अनुसार यहाँ कुल 85 मंदिर थे, लेकिन अब 25 मंदिर ही मौजूद हैं जो संरक्षण की विभिन्न अवस्थाओं में हैं।

XII) चंदेल वंश के पतन (1150 ई.) के बाद मुस्लिम आक्रमणकर्ताओं द्वारा इन मंदिरों को काफी क्षति पहुँची और इसी के चलते यहाँ के स्थानीय निवासी खजुराहो को छोड़कर बाहर चले गए।

XIII) यहाँ का सबसे प्रसिद्ध मंदिर ‘कंदारिया महादेव मंदिर’ है, जो 6500 वर्ग फीट में फैला हुआ है और इसके शिखर की ऊँचाई 116 फीट है।

XVI) 13वीं से 18वीं सदी तक खजुराहो के मंदिर वनों से ढके रहे। वनों से ढके होने के कारण जनता की पहुँच से दूर बने रहे, लेकिन ब्रिटिश इंजीनियर टी.एस. बर्ट ने इन्हें दोबारा खोजा और तब से ये मंदिर जनता के लिए आकर्षण का केंद्र बन गए।

XV) खजुराहो महोबा के 54 कि.मी. दक्षिण, छतरपुर के 45 कि.मी. पूर्व और सतना जिले के 105 कि.मी. पश्चिम में स्थित है तथा निकटतम रेलवे स्टेशनों अर्थात् महोबा, सतना और झांसी से पक्की सड़कों से अच्छी तरह जुड़ा है।

प्रश्न - मंदिर स्थापत्य के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

- A. स्वतंत्र आधार (चूना-पत्थर) के मंदिरों का उद्भव गुप्त काल में माना जाता है?
 - B. लाइखाँ, जो कि एक प्रारंभिक मंदिर है, बादामी के चालुक्यों से संबंध है।
 - C. खजुराहो के मंदिरों में मंदिर के समस्त खंड आंतरिक और ब्रह्म रूप से जुड़े हुए हैं।
 - D. काँची का कैलाश नाथ मंदिर द्रविड़ शैली का सबसे प्रारंभिक स्वतंत्र आधार का मंदिर है।
- उत्तर - D**

द्रविड़ शैली के मंदिरों की प्रमुख विशेषताएँ एवं उदाहरण

- I. द्रविड़ शैली के मंदिरों का शिखर पिरामिड नुमा होता है, जो ऊपर की ओर आकार में छोटी होती मंजिलों का बना होता है।
- II. इन मंदिरों के पिरामिड का शीर्ष भाग 8 या 6 कोणों के आकार का होता है।
- III. गर्भ ग्रह वृत्ताकार आकृति का बना होता है।

- मण्डप के एक ओर काष्ठमंच मिले हैं जिन्हें काष्ठशिल्प का अद्भुत उदाहरण माना जा सकता है। खुदाई में अशोक के स्तम्भ से मिलता-जुलता एक स्तम्भ का निचला भाग पूर्ण अवस्था में प्राप्त हुआ है।
- यह राजप्रासाद चौथी शताब्दी ईस्वी में ज्यों-का-त्यों विद्यमान था और फाह्यान को यह देखकर आश्चर्य हुआ था कि 'इसे संसार के मनुष्य नहीं बना सकते, अपितु यह देवताओं द्वारा बनाया गया लगता है।
- इस प्रकार मौर्य युग में काष्ठकला अपने विकास की पराकाष्ठा पर पहुँच गयी थी। ईलियन के अनुसार सूसा तथा एकबटना के राजप्रासाद भी भव्यता में पाटलिपुत्र के राजप्रासाद की बराबरी नहीं कर सकते थे।
- मौर्य राजप्रासाद की समता कुछ विद्वान् पर्सिपोलिस से प्राप्त हुए सौ स्तम्भों वाले हखामनी प्रासाद से करते हैं।
- अशोक के समय तक आते-आते मौर्यकला के बहुसंख्यक स्मारक हमें मिलने लगते हैं। इस समय की कला-कृतियों को हम चार भागों में विभक्त कर सकते हैं -
स्तम्भ, स्तूप, वेदिका तथा गुहा विहार। इनका परिचय इस प्रकार है।

मौर्य साम्राज्य के दौरान कला और वास्तुकला

अशोक के समय तक आते-आते मौर्यकला के बहुसंख्यक स्मारक हमें मिलने लगते हैं। इस समय की कला-कृतियों को हम चार भागों में विभक्त कर सकते हैं:

- 1 स्तम्भ,
- 2 स्तूप,
- 3 वेदिका तथा
- 4 गुहा-विहार।

इनका परिचय इस प्रकार है:

1. स्तम्भ:

स्तम्भ मौर्ययुगीन वास्तु कला के सबसे अच्छे उदाहरण हैं। सर जान मार्शल, पर्सी ब्राउन, स्टेला कैमिंश जैसे विद्वान इन्हें ईरानी स्तम्भों की अनुकृति बताते हैं। किन्तु यह समीचीन नहीं है क्योंकि हमें ईरानी तथा अशोक के स्तम्भों में कई मूलभूत अन्तर दिखाई देते हैं।

इनमें कुछ इस प्रकार हैं-

- 1) अशोक के स्तम्भ एकात्मक अर्थात् एक ही पत्थर से तराशकर बनाये गये हैं। इसके विपरीत ईरानी स्तम्भों को कई मण्डलाकार टुकड़ों को जोड़कर बनाया गया है।
- 2) अशोक के स्तम्भ बिना चैकी या आधार के भूमि पर टिकाये गये हैं, जबकि ईरानी स्तम्भों को चैकी पर टिकाया गया है।
- 3) ईरानी स्तम्भ विशाल भवनों में लगाये गये थे। इसके विपरीत अशोक के स्तम्भ स्वतंत्र रूप से विकसित हुये हैं।
- 4) अशोक स्तम्भों के शीर्ष पर पशुओं की आकृतियाँ हैं, जबकि ईरानी स्तम्भों पर मानव आकृतियाँ हैं।
- 5) ईरानी स्तम्भ गड़ारीदार हैं किन्तु अशोक के स्तम्भ सपाट हैं। अशोक के स्तम्भों के शीर्ष पर लगी पशु मूर्तियों का एक विशेष प्रतीकात्मक अर्थ है जिसकी समुचित व्याख्या भारतीय परम्परा में ही सम्भव है। किन्तु ईरानी स्तम्भ शीर्षकों में कोई प्रतीकात्मकता नहीं है।
- 6) अशोक के स्तम्भ नीचे से ऊपर की ओर क्रमशः पतले होते गये हैं, जबकि ईरानी स्तम्भों की चैड़ाई नीचे से ऊपर तक एक जैसी है।
 - इस प्रकार हम अशोक स्तम्भों को ईरानी स्तम्भों की नकल नहीं कह सकते हैं। स्पूनर का विचार है कि मौर्य स्तम्भों पर जो ओपदार पालिश है वह ईरान से ही ग्रहण की गई है। लेकिन वासुदेव शरण अग्रवाल ने आप स्तम्भ सूत्र तथा महाभारत से ऐसे उदाहरण खोज निकाले हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि यह पालिश भारतीयों को बहुत पहले से ही ज्ञात थी।
 - उनके अनुसार आप स्तम्भ सूत्र में मृद्भाण्डों को चमकीला बनाने की विधि के प्रसंग में 'श्लक्षणीकरण' तथा 'श्लक्षणी-कुर्वन्ति' (चिकना करने के मसालों से उसे चिकना किया जाता था) शब्द प्रयुक्त किया गया है जो ओपदार पालिश की प्राचीनता का सूचक है।
 - पिपरहवा बौद्ध स्तूप की धातुगर्भ-मंजूषा, पटना की यक्ष प्रतिमायें, लोहानीपुर से प्राप्त जैन तीर्थकरों के धड़ आदि सभी में चमकीली पालिश लगाई गयी है। इस संबंध में एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि पूर्व मौर्य युग के उत्तर भारत के विभिन्न स्थलों से काले रंग के चमकीले भाण्ड मिले हैं जिनका समय ई.पू. 600-200 निर्धारित है।

अध्याय - 3

मुगल काल

- राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह-अफगान, राजपूत, दक्कनी राज्य और मराठा
- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चंगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया, जिसमें लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की - दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलटकर रख दिया और मुगल साम्राज्य और मुगल सल्तनत की नींव रखी। गुप्त वंश के पश्चात् मध्य भारत में केवल मुगल साम्राज्य ही ऐसा साम्राज्य था, जिसका एकाधिकार हुआ था।
- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था, अधिकतर मुगल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे, मुगल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।

बाबर का शासन काल (1526 - 1530 ई.)

- बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फिलहाल उज्बेकिस्तान का हिस्सा है।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था।
- पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
- खानवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
- चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदिनी राय और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
- घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।

नोट :- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया।

- उसकी विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।
- पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए 'उस्मानी विधि जिसे 'स्मी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों को (दिल्ली शासकों) सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर अपने आप को 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।
- पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था। जिसमें विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाजी की उपाधि धारण की थी। इस युद्ध के लिए अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था।
- साथ ही मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी, यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था। राजपूतों के विरुद्ध इस 'खानवा के युद्ध का प्रमुख कारण बाबर द्वारा भारत में ही रुकने का निश्चय था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- इसके बाद बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुलुक-ए-बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चंगताई तुर्की में लिखा है।
- इसमें बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है, जिसका फारसी अनुवाद अब्दुरहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।

- बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है। साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।
- बाबर ने 'रिसाल-ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी' भी कहा जाता है। बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था। साथ ही बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में 'आरामबाग' के नाम से जाना जाता है। इसमें चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है।
- यहीं पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।

हुमायूँ (1530 ई. - 1556 ई.)

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुगल वंश के शासन पर बैठा।
- हुमायूँ ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।
- हुमायूँ का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी अफगान नेता शेर खां था, जिसे शेरशाह शूरी भी कहा जाता है।
- हुमायूँ का अफगानों से पहला मुकाबला 1532 ई. में दौहरिया नामक स्थान पर हुआ। इसमें अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। इस संघर्ष में हुमायूँ सफल रहा।
- 1532 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में दीन पनाह नामक नगर की स्थापना की।
- 1535 ई. में ही उसने बहादुर शाह को हराकर गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की।

- शेर खां की बढ़ती शक्ति को दबाने के लिए हुमायूँ ने 1538 ई. में चुनारगढ़ के किले पर दूसरा घेरा डालकर उसे अपने अधीन कर लिया।
- 1538 ई. में हुमायूँ ने बंगाल को जीतकर मुगल शासक के अधीन कर लिया। बंगाल विजय से लौटते समय 26 जून, 1539 को चौसा के युद्ध में शेर खां ने हुमायूँ को बुरी तरह पराजित किया।
- शेर खां ने 17 मई, 1540 को बिलग्राम के युद्ध में पुनः हुमायूँ को पराजित कर दिल्ली पर बैठा। हुमायूँ को मजबूर होकर भारत से बाहर भागना पड़ा।
- 1545 ई. में हुमायूँ ने कामरान से काबुल और गंधार छीन लिया।
- 15 मई, 1555 को मच्छीवाड़ा तथा 22 जून, 1555 को सरहिन्द के युद्ध में सिकन्दर शाह सूरी को पराजित कर हुमायूँ ने दिल्ली पर पुनः अधिकार लिया।
- 23 जुलाई, 1555 को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ, परन्तु अगले ही वर्ष 27 जनवरी, 1556 ई. को पुस्तकालय की सिढ़ियों से गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गयी।
- लेनपूल ने हुमायूँ पर टिप्पणी करते हुए कहा, "हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए उसने अपनी जान दे दी।"
- बैरम खां हुमायूँ का योग्य एवं वफादार सेनापति था, जिसने निर्वासन तथा पुनः राज सिंहासन प्राप्त करने में हुमायूँ की मदद की।

शेरशाह सूरी (1540 ई. - 1545 ई.)

- बिलग्राम के युद्ध में हुमायूँ को पराजित कर 1540 ई. में 67 वर्ष की आयु में दिल्ली की गद्दी पर बैठा। इसने मुगल साम्राज्य की नींव उखाड़ कर भारत में अफगानों का शासन स्थापित किया।
- इसके बचपन का नाम फरीद था। शेरशाह का पिता हसन खां जौनपुर का एक छोटा जागीरदार था।
- 1539 ई. में बंगाल के शासक नुसरत शाह को पराजित करने के बाद शेर खां ने 'हजरत-ए-आला' की उपाधि धारण की।
- 1539 ई. में चौसा के युद्ध में हुमायूँ को पराजित करने के बाद शेर खां ने 'शेरशाह' की उपाधि धारण की।
- 1540 में दिल्ली की गद्दी पर बैठने के बाद शेरशाह ने सूरवंश अथवा द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना की।

- शेरशाह ने अपनी उत्तरी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए 'रोहतासगढ़' नामक एक सुदृढ़ किला बनवाया।
- 1544 ई. में शेरशाह ने मारवाड़ के शासक मालदेव पर आक्रमण किया। इसमें उसे बड़ी मुश्किल से सफलता मिली। इस युद्ध में राजपूत सरदार जैता 'और' कुप्पा ने अफगान सेना के छक्के छड़ा दिए।
- 1545 ई. में शेरशाह ने कालिंजर के मजबूत किले का घेरा डाला, जो उस समय कीरत सिंह के अधिकार में था, परन्तु 22 मई 1545 को बासूद के द्वेर में विस्फोट के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।
- प्रसिद्ध ग्रैंड ट्रंक रोड (पेशावर से कलकत्ता) की मरम्मत, करवाकर व्यापार और आवागमन को सुगम बनाया।
- शेरशाह का मकबरा बिहार के सासाराम में स्थित है, जो मध्यकालीन कला का एक उत्कृष्ट नमूना है।
- शेरशाह की मृत्यु के बाद भी सूर वंश का शासन 1555 ई. में हुमायूँ द्वारा पुनः दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने तक कायम रहा।

अकबर (1556 - 1605 ई.)

हुमायूँ की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अकबर का कलानौर नामक स्थान पर 14 फरवरी, 1556 को मात्र 13 वर्ष की आयु में राज्यभिषेक हुआ।

- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 को अमरकोट के राजा वीरमाल के प्रसिद्ध महल में हुआ था।
- अकबर ने बचपन से ही गजनी और लाहौर के सूबेदार के रूप में कार्य किया था।
- भारत का शासक बनने के बाद 1556 से 1560 तक अकबर बैरम खां के संरक्षण में रहा।
- अकबर ने बैरम खां को अपना वजीर नियुक्त कर खान-ए-खाना की उपाधि प्रदान की थी।
- 5 नवम्बर, 1556 को पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर की सेना का मुकाबला अफगान शासक मुहम्मद आदिल शाह के योग्य सेनापति हैमू की सेना से हुआ, जिसमें हैमू की हार एवं मृत्यु हो गयी।
- 1560 से 1562 ई. तक दो वर्षों तक अकबर अपनी धाय मां महम अनगा, उसके पुत्र आदम खां तथा उसके सम्बन्धियों के प्रभाव में रहा। इन

दो वर्षों के शासनकाल को पेटिकोट सरकार की संज्ञा दी गयी है।

- अकबर ने 1575 ई. में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना की। इस्लामी विद्वानों की अशिष्टता से दुःखी होकर अकबर ने 1578 ई. में इबादतखाना में सभी धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित करना शुरू किया।
- 1582 ई. में अकबर ने एक नवीन धर्म 'ताँहीद-ए-इलाही 'या' दीन-ए-इलाही' की स्थापना की, जो वास्तव में विभिन्न धर्मों के अच्छे तत्वों का मिश्रण था।
- अकबर ने सती प्रथा को रोकने का प्रयत्न किया, साथ ही विधवा विवाह को कानूनी मान्यता दी। अकबर ने लड़कों के विवाह की उम्र 16वर्ष और लड़कियों के लिए 14वर्ष निर्धारित की।
- अकबर ने 1562 ई. में दास प्रथा का अंत किया तथा 1563 में तीर्थ यात्रा पर से कर को समाप्त कर दिया।
- अकबर ने 1664 ई. में जजिया कर समाप्त कर सामाजिक सदभावना को सुदृढ़ किया।
- 1579 ई. में अकबर ने मजहर 'या' अमोघवृत्त की घोषणा की।
- अकबर ने गुजरात विजय की स्मृति में फतेहपुर सीकरी में बुलन्द दरवाजा का निर्माण कराया था।
- अकबर ने 1575-77 ई. में सम्पूर्ण साम्राज्य को 12 सूबों में बाँटा था, जिनकी संख्या बराड़, खानदेश और अहमद नगर को जीतने के बाद बढ़कर 15 हो गयी।
- अकबर ने सम्पूर्ण साम्राज्य में एक सरकारी भाषा (फारसी), एक समान मुद्रा प्रणाली, समान प्रशासनिक व्यवस्था तथा बाँट, माप प्रणाली की शुरुआत की।
- अकबर ने 1574 -75 ई. में मनसबदारी प्रथा की शुरुआत किया।

जहाँगीर (1605 ई. - 1627 ई.)

- 17 अक्टूबर 1605 को अकबर की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र सलीम जहाँगीर के नाम से गद्दी पर बैठा।
- गद्दी पर बैठते ही सर्वप्रथम 1605 ई. में जहाँगीर को अपने पुत्र खुसरो के विद्रोह का सामना करना पड़ा। जहाँगीर और खुसरो के बीच भेरावल नामक

प्रश्न-5. दस्तक शब्द से तात्पर्य है?

- A. दंगा B. शुल्क मुक्त व्यापार
C. बंदरगाह D. बाजार

उत्तर - B

प्रश्न-6. प्लासी के युद्ध में मिराजुद्दौला के साथ किसने विश्वासघात किया था?

- A. मीरजाफर B. मीर कासिम
C. अलीवर्दी खान D. सलीम मुल्ला

उत्तर - A

प्रश्न-7. कर्नाटक युद्धों में अंग्रेजों द्वारा किसे पराजित किया गया?

- A. फ्रांसीसियों को B. पुर्तगालियों को
C. इचों एवं पुर्तगालियों को D. इचों को

उत्तर - A

प्रश्न-8. बंगाल का पहला गवर्नर जनरल था?

- A. लॉर्ड क्लाइव B. लॉर्ड वारेन हेस्टिंग
C. लॉर्ड जॉन शोर D. लॉर्ड कार्नवालिस

उत्तर - B

प्रश्न-9. भारत का पहला भारतीय गवर्नर जनरल कौन था?

- A. B.R. अम्बेडकर B. सी. राजगोपालाचारी
C. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद D. डॉ. एस. राधाकृष्णन

उत्तर - B

प्रश्न-10. निम्न में से किसको आधुनिक भारत के निर्माण के रूप में जाना जाता है ?

- A. लॉर्ड कार्नवालिस B. विलियम बैंटिक
C. लॉर्ड डलहौजी D. लॉर्ड कर्जन

उत्तर - C

प्रश्न-11. भारत के औपनिवेशिक काल में अधोमुखी निर्यादन सिद्धांत किस क्षेत्र से संबन्धित था?

- A. रेल B. चिकित्सा
C. शिक्षा D. सिंचाई

उत्तर - C

मुख्य परीक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न

1. आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन के धार्मिक शिक्षाओं में आधारभूत अंतर क्या है?
2. भारतीय जागरण में स्वामी विवेकानंद का विशिष्ट योगदान क्या था?

अध्याय - 3

स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

राष्ट्रवाद कांग्रेस की विभिन्न विचार धाराएँ विभाजन के उदय के स्थापना व स्वतंत्रता कारण उदारवादी उग्रवादी क्रांतिकारी गाँधीवादी समाजवादी

राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण :

- (1) ब्रिटिश राजनीतिक आर्थिक सामाजिक नीतियाँ
 - ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विभिन्न राज्यों को जीतकर उनकी अलग-अलग पहचान समाप्त कर वहाँ एक समान सामाजिक-राजनीतिक संरचना स्थापित की।
 - इसी क्रम में भारत का एक गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया तो साथ ही, एक समान न्यायिक प्रणाली लागू की गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले भारतीय एक सूत्र में बचे।
 - वस्तुतः ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया। दरअसल एक साझे एकजुट की उपस्थिति एवं पहचान ने विभिन्न क्षेत्र के भारतीयों को ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
 - ब्रिटिश शासन द्वारा विकसित संचार प्रणाली जैसे-रेलवे सड़क डाकतार व्यवस्थाने विभिन्न क्षेत्र के लोगों के आवागमन को आसान बनाकर आपसी संपर्क को बढ़ावा दिया।
 - फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार निर्मित हुआ। वस्तुतः रेलवे जैसे साधनों के विकास से देश के विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों एवं लोगों का आपसी संपर्क आसान हुआ। इससे राजनीतिक विचारों के आदान प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।
 - ब्रिटिश शिक्षा नीति एवं पश्चिमी चिंतन ने भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया। फलतः एक भारतीय मध्यवर्ग का उदय हुआ जो ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप को समझ सका और शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर एककिया एवं मध्यवर्ग होकर बेंथम मिल, रूसो, जॉन लॉक, मोटेस्व्यू डार्विन के विचारों से परिचित

हुआ और जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करने लगा।

- इस तरह आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके उसके औपनिवेशिक स्वरूप को उजागर कर दिया और शोषण से मुक्ति के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना कर उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। इसी संदर्भ में यह कहा गया कि “भारतीयों ने पश्चिमी हथौड़े से पश्चिमी बेड़ियों को तोड़ डाला”।

(2) सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन :-

- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछूत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परम्परा को उद्धृत कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।
- इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन :-

- पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे - स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) लिटन और कर्जन की नीतियाँ :-

- लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया। लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया। साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में उम्र सीमा में कमी कर भारतीयोंको इससे बाहर करने की योजना बनायी।
- इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने

का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।

- कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया। तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की। इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा।
- वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ। इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गया कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं'।

(5) रिपन की नीतियाँ :-

- वायसराय रिपन के समय 1883 में 'इल्बर्ट बिल' विवाद सामने आया। जिसने भारतीयों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया। वस्तुतः इल्बर्ट बिल के तहत भारतीयों को भी यूरोपियों का मुकदमा सुनने का अधिकार दिया गया।
- किंतु अंग्रेजों ने संगठित होकर इस बिल का विरोध किया जिसे खेत विद्रोह के नाम से जाना जाता है। अतः रिपन को यह बिल वापस लेना पड़ा। इस बिल के विवाद से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति पर चल रहे हैं और संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगों को मनवाया जा सकता है।

कांग्रेस की स्थापना से पूर्व की संस्थाएँ :-

- (1) सर्वप्रथम 1836 में बंग भाषा प्रकाशक सभा की स्थापना हुई।
- (2) 1838 में बंगाल में “लैंड होल्डर्स सोसाइटी” की स्थापना हुई जो जमींदारों की संस्था थी।
- (3) 1851 में “ब्रिटिश इंडियन एसो” की स्थापना हुई जिसके प्रथम अध्यक्ष राधा कांत देव थे जिन्होंने ब्रिटिश संसद को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि उच्च वर्ग के अधिकारियों के वेतन में कमी की जाए तथा नमक शुल्क एवं 'जल शुल्क' में कमी की जाए।
- (4) 1866 में ईस्ट इंडिया एसो की स्थापना दादाभाई नौरोजी ने लंदन में की जिसका उद्देश्य भारत के लोगों की समस्याओं और मांगों से ब्रिटिश

जनमत को परिचित कराना था। और इंग्लैंड में भारतीयों के पक्ष में जन समर्थन हासिल करना था।

(5) 1867 में पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना रानाडे एवं गणेश वासुदेव जोशी ने की।

(6) 1875 में शिशिर कुमार घोष ने कलकत्ता में इंडिया लीग की स्थापना की।

(7) 1876 में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस ने इंडियन एसो० की स्थापना की। इस संस्था को कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था कहा जाता है, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने कहा कि यह संस्था संयुक्त भारत की अवधारणा पर आधारित है।

• इसकी प्रेरणा हमें मेजिनी के इटली के एकीकरण के आदर्शों से मिलती है। इंडियन एसो० की वार्षिक बैठक Dec. 1885 में कलकत्ता हुई जिसमें सुरेन्द्र नाथ बनर्जी शामिल थे। इसी कारण वे Dec. 1885 में बॉम्बे में हो रहे कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में शामिल नहीं पाए। इंडियन एसो० के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :

(a) भारत में जनमत तैयार करना

(b) हिंदू-मुस्लिम जनसंपर्क बढ़ाना।

(c) सिविल सेवा का भारतीयकरण करना

• वस्तुतः इस परीक्षा के लिए उच्च सीमा में वृद्धि करना और भारत में भी परीक्षा आयोजित करना। इसके लिए ब्रिटिश सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखने हेतु 'लाल मोहन घोष' को लंदन भेजा है गया।

(8) 1884 में महास महाजन सभा की स्थापना वीर राघवाचारी, सुब्रमण्यम अय्यर एवं आनंद चारलू ने की।

• कांग्रेस की स्थापना :

• कांग्रेस शब्द संयुक्त राज्य अमेरिका से लिया गया है जिसका अर्थ लोगों का समूह है। इसका आरंभिक नाम इंडियन नेशनल यूनियन रखा गया और प्रथम सम्मेलन पुणे में आयोजित करने की घोषणा की गई।

• किंतु वहां प्लेग फैलने के कारण यह सम्मेलन बाम्बे में हुआ वहां प्लेग और दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया।

• कांग्रेस का संस्थापक एक ब्रिटिश सेवानिवृत्त अधिकारी A.O. ह्यूम था। इसके प्रथम अध्यक्ष

व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे। इसमें 72 लोग सदस्य बने।

• कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बद्रुद्दीन तैय्यब थे जो 1887 में मद्रास अधिवेशनमें अध्यक्ष बने।

कांग्रेस की स्थापना के वास्तविक उद्देश्य:

देश के विभिन्न भागों के राष्ट्रवादी राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करना।

• जाति, धर्म तथा प्रांतीय विभेदों को मिटाकर राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित करना।

• जनप्रिय मांगों को निरूपित कर उन्हें सरकार के सामने रखना।

• राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक मुद्दों पर देश में जनमत को प्रशिक्षित और संगठित करना।

• भविष्य के राजनीतिक कार्यक्रमों की रूपरेखा सुश्चित करना।

• भारत के प्रति अन्यायपूर्ण परिस्थितियों को खत्म करके भारत और ब्रिटेन के संबंधों को घनिष्ठ बनाना।

कांग्रेस की स्थापना के संबंध में विवाद :

(i) सेफ्टी वाल्व सिद्धांत सुरक्षा कपाट सिद्धांत

• इस सिद्धांत का प्रतिपादन लाला लाजपत राय ने किया। उन्होंने ह्यूम के जीवनी लेखक विलियम वेडरबर्न को आधार बनाकर अपनी अवधारणा 'यंग इंडिया' लेखों में प्रकाशित किया और कहा कि कांग्रेस लॉर्ड डफरिन के मस्तिष्क की उपज है।

• वस्तुतः भारतीय असंतोष को पहले ही जान लेने के लिए इस संस्था का गठन किया। दरअसल लाला लाजपत राय ने कांग्रेस की यह आलोचना उसके उदारवादी नेतृत्व पर प्रहार करने के क्रम में की।

(ii) तडित चालक सिद्धांत

• गोपाल कृष्ण गोखले ने इस सिद्धांत के तहत कांग्रेस की स्थापना को स्पष्ट करते हुए कहा कि सरकारी असंतोष से बचने के लिए भारतीय नेताओं ने ह्यूम का प्रयोग किया।

• वस्तुतः कांग्रेस का संस्थापक यदि इस समय कोई अंग्रेज नहीं होता, तो आरंभ में ही यह संस्था ब्रिटिश दमन का शिकार हो सकती थी। अतः ब्रिटिश दमन से बचने के लिए भारतीयों ने ह्यूम का नेतृत्व स्वीकार किया जो एक ब्रिटिश अधिकारी थे।

बिहार का इतिहास

अध्याय - 1

बिहार : एक परिचय

बिहार का संक्षिप्त परिचय :-

बिहार भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक राज्य है और इसकी राजधानी पटना है। यह जनसंख्या की दृष्टि से भारत का तीसरा सबसे बड़ा प्रदेश है जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से बारहवां (12) है। 15 नवम्बर, सन् 2000 ई. को बिहार के दक्षिणी हिस्से को अलग कर एक नया राज्य झारखण्ड बनाया गया। बिहार के उत्तर में नेपाल, दक्षिण में झारखण्ड, पूर्व में पश्चिम बंगाल, और पश्चिम में उत्तर प्रदेश स्थित है। यह क्षेत्र गंगा नदी तथा उसकी सहायक नदियों के उपजाऊ मैदानों में बसा है। गंगा इसमें पश्चिम से पूर्व की तरफ बहती है।

बिहार की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है और 11.3 प्रतिशत लोग नगरों में रहते हैं। इसके अलावा बिहार के 46% लोग 25 वर्ष से कम आयु के हैं। प्राचीन काल में बिहार विशाल साम्राज्यों, शिक्षा केन्द्रों एवं संस्कृति का गढ़ था। 'बिहार', 'विहार' (बौद्ध सन्यासियों के ठहरने के स्थान) शब्द का अपभ्रंश है। 12 फरवरी 1948 में महात्मा गांधी के अस्थि कलश जिन 12 तटों पर विसर्जित किए गए थे, त्रिमोहिनी संगम भी उनमें से एक है।

हिंदी, बिहार की राजभाषा और उर्दू द्वितीय राजभाषा है। मैथिली भारतीय संविधान के अष्टम अनुसूची में सम्मिलित एकमात्र बिहारी भाषा है। भोजपुरी, मगही, अंगिका तथा बज्जिका बिहार में बोली जाने वाली अन्य प्रमुख भाषाओं और बोलियों में सम्मिलित हैं। प्रमुख पर्वों में छठ, होली, दीपावली, दशहरा, महाशिवरात्रि, नागपंचमी, श्री पंचमी, मुहूर्म, ईद, तथा क्रिसमस हैं। सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म स्थान होने के कारण पटना सिटी (पटना) में उनकी जयन्ती पर भी भारी श्रद्धार्पण देखने को मिलता है। बिहार ने हिंदी को सबसे पहले राज्य की अधिकारिक भाषा माना है।

(क) बिहार की "ऐतिहासिक पृष्ठभूमि"

बिहार का अतीत अत्यंत समृद्ध और गौरवशाली रहा है। वर्तमान बिहार विभिन्न ऐतिहासिक क्षेत्रों से मिलकर बना है। बिहार के क्षेत्र जैसे-मगध, मिथिला और अंग- धार्मिक ग्रंथों और प्राचीन भारत के महाकाव्यों में वर्णित हैं।

अतीत की घटनाओं का प्रमाणित विवरण ही इतिहास कहलाता है। यह प्रमाणित विवरण मानक स्रोतों पर आधारित होता है, जो साहित्यिक एवं पुरातात्विक श्रेणियों में विभाजित है।

भारत के प्रमुख राज्यों में बिहार कई कारणों से अग्रगण्य है। बिहार की राजनीतिक सीमाएं पिछले दशकों में कई बार बदली हैं। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में बिहार एवं उड़ीसा, बंगाल प्रांत के अंग थे। 1912 में बिहार एवं उड़ीसा को बंगाल से अलग कर एक नए प्रांत का गठन हुआ। 1936 में उड़ीसा को बिहार से पृथक कर बिहार को अलग प्रांत बनाया गया था। सामान्यतः 1912 को बिहार प्रांत के गठन का वर्ष मनाया जाता है, मगर उस वक्त बिहार एवं उड़ीसा संयुक्त रूप से एक प्रांत बने थे और 1936 में ही पृथक बिहार का गठन संभव हुआ था। 1947 - 1948 में बिहार एवं उड़ीसा की सीमाओं का निर्धारण हुआ। 1956 में राज्यों का भाषाई आधार पर पुनर्गठन के क्रम में पूरलिया एवं पूर्णिया जिलों के कुछ भाग पश्चिम बंगाल में शामिल किए गए थे। 15 नवंबर 2000 को, बिहार का पुनः विभाजन हुआ और छोटानागपुर के पठारी भूखंड और इससे संबंधित जनजातीय बाहुल्य आबादी वाले क्षेत्र को झारखंड नामक एक नई राज्य का रूप दिया गया।

बिहार, पूर्व ऐतिहासिक काल से ही विकसित होने वाली संस्कृतियों का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है।

- लगभग एक लाख ईसा पूर्व में विकसित होने वाले आरंभिक पूर्व प्रस्तर युगीन औजारों के अवशेष मुंगेर और नालंदा जिलों से प्राप्त हुए हैं। इनमें खुरदरे पत्थर के बने हुए कुल्हाड़ी के फलक, और चाकू और खुर्पियाँ शामिल हैं।
- मध्यवर्ती और परवर्ती पूर्व प्रस्तर युगीन के अवशेष भी यहां से प्राप्त हुए हैं।
- नव प्रस्तर युग के अवशेष सारण और वैशाली जिला में मिले हैं। इनमें छोटे आकार के पत्थर और कहीं-कहीं हड्डी के बने औजार भी शामिल हैं।
- प्रस्तर युग के अवशेष सारण, वैशाली, गया और पटना जिलों से प्राप्त हुए हैं।

अध्याय - 2

प्राचीनकालीन बिहार

प्रागैतिहासिक बिहार

बिहार का इतिहास अति प्राचीन है। यहाँ दक्षिणी भाग में स्थित पर्वतीय इलाकों में आदि मानव के निवास के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। इसकी पुष्टि पुरातात्विक खोजों और खुदाई से प्राप्त लगभग एक लाख वर्ष पुरानी ऐतिहासिक सामग्रियों से होती है। ऐसे सबसे प्राचीन अवशेष **पूर्वपाषाण काल** के हैं जो अनुमानतः 1 लाख ई. पू. के काल के हैं। पुरापाषाणकालीन संस्कृति के उद्भव और विकास का आरम्भिक प्रमाण दक्षिण बिहार के छोटानागपुर के पठार में प्राप्त हुए हैं। पहली बार पुरापाषाणकालीन उपकरण बी. बॉल और हुगल को 1865 ई. में धनबाद जिला में स्थित कुनकुने गाँव में मिले थे। यहाँ पत्थर की कुल्हाड़ी और चाकू मिले थे। इस समय से अब तक छोटा नागपुर के पठार के साथ-साथ नालन्दा, गया, मुंगेर और भागलपुर जिला के अनेक स्थानों पर निम्न मध्य और उच्च पुरापाषाणकाल तथा मध्य पुरा-पाषाणकाल के अवशेष मिले हैं। ये सभी स्थल जंगल से आच्छादित पर्वत शिखरों पर थे। उत्तर बिहार के वाल्मीकि नगर में भी कुछ पुरापाषाणकाल के उपकरण मिले हैं। इन उपकरणों में आशुलियन प्रकार की हाथ की कुल्हाड़ियों, काटने वाले अस्क, स्क्रैपर और फलक, फलक झुड़िया, अर्द्ध चान्द्रिक, उत्कीर्णक, छुरी और खुरचनी आदि प्रमुख हैं। इस काल में स्थायी बस्तियों की स्थापना नहीं हुई थी। आवास के रूप में पहाड़ की चट्टान अथवा गुफाओं का सहारा लिया जाता था। गया जिले के शेरघाटी में ऐसे दो चट्टानी शरण स्थल प्रकाश में आये हैं।

नवपाषाण काल में मानव पठारी इलाकों को छोड़कर मैदानी इलाकों में बसने लगा। बिहार में विकसित नव-पाषाणिक बस्तियाँ चिरांद, चेचर, ताराडीह, मनेर और सेनुआर में पायी गयी हैं। इन स्थलों से पत्थरों के अत्यन्त सूक्ष्म औजार प्राप्त हुए हैं। छपरा से 11 किमी. दक्षिण पूर्व में घाघरा नदी के किनारे स्थित चिरांद में हड्डियों से बने उपकरण भी मिले हैं। नवपाषाणकाल में मानव ने झोपड़ी में रहना शुरू किया। इसी काल में भौतिक जीवन के उन मूल तत्त्वों की स्थापना हुई जिनका

कालान्तर में विकास हुआ और जिन्होंने बाद की ताम्र-पाषाणकालीन संस्कृति के उदय का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

नवपाषाण युग के अंत तक धातुओं का उपयोग शुरू हो चुका था। धातुओं में शुरुआत में ताम्बा का प्रयोग शुरू हुआ। बिहार के सोनपुर, ताराडीह, मनेर, सेनुआर, माँझी, चिरोद चेर तथा अस्थिर में ताम्रपाषाणिक संस्कृति के अवशेष मिले हैं। इन ताम्रपाषाणिक स्थलों में से ताराडीह, मनेर, सेनुआर, चिरोद और चेचर में नवपाषाणिक स्तर के बाद इसी क्रम में ताम्रपाषाणिक संस्कृति के अवशेष पाये गये हैं। माँझी, अरियप और सोनपुर से ताम्रपाषाणिक स्तर से ही आबादी का पहला प्रमाण मिला है। इन स्थलों से मत्स्य भाले, तलवार, मानवतारोपी आकृति आदि मिले हैं। इनका उपयोग शिकार, लड़ाई, शिल्प एवं कृषि कार्य के लिए होता था। यहाँ से काले एवं लाल मृदभांड, पूर्वी उत्तरी वाले चमकीले मृदभांड एवं काले तथा लाल रंग वाले चित्रित मृदभांड मिले हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल के मानव ने एक ही स्थान पर अधिक समय व्यतीत करने की बजाय विभिन्न क्षेत्रों में अपना प्रसार करना प्रारम्भ कर दिया था।

ताम्रपाषाण संस्कृति के बाद लौहयुगीन संस्कृति की शुरुआत हुई। बिहार के भौतिक जीवन के विकास में लौह तकनीक के विकास ने एक नये अध्याय की शुरुआत की। लोहे के व्यवहार का पहला साक्ष्य चिरोद और ताराडोह में मिला है। लौह युग में बस्तियों की घेरेबन्दी की शुरुआत हुई तथा बस्तियों के अन्दर नागरिक सुविधाओं की व्यवस्था की जाने लगी। इसी काल में कृषि का विस्तार हुआ और शिल्प व उद्योग पूर्व की अपेक्षा अधिक विकसित हुए। अब गाँव ने कस्बों व नगरों का रूप लेना शुरू किया। इस प्रकार लौह युग में बिहार में नगरीकरण के लक्षण प्रकट होने आरम्भ हुए।

इन सभी से यह अनुमानित होता है कि पूर्व ऐतिहासिक युग में भी बिहार मानव सभ्यता के विकास के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में रहा है।

- बिहार में ऐतिहासिक युग का आरंभ उत्तर वैदिक काल से जुड़ा हुआ है।

- आर्यों के पूर्वी भारत में विस्तार और गांव के घाटी के क्षेत्र में द्वितीय नगरीकरण की प्रक्रिया में बिहार का विशेष महत्व रहा है।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध धर्म और जैन धर्म के उद्गम स्रोत के रूप में बिहार ने संसार को शांति एवं अहिंसा का संदेश दिया है।
- इसी क्षेत्र से विशाल साम्राज्य की उत्पत्ति की प्रक्रिया भारतीय उपमहाद्वीप में आरंभ हुई है।
- नंद शासकों द्वारा प्रस्तुति पर मौर्यों ने एक कुशल केंद्रीकृत शासन प्रणाली का निर्माण यहां किया।
- सम्राट अशोक ने पहली बार एक कल्याणकारी राज्य का आदर्श प्रस्तुत किया।
- गुप्त काल में यह क्षेत्र विद्या साहित्य और विज्ञान की अद्भुत प्रगति का साक्षी रहा है।
- पाल शासकों ने इसे बौद्ध विद्या का प्रसिद्ध केंद्र बनाया जिसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रही। चित्रकला एवं मूर्तिकला की अनूठी प्रगति भी इस युग की विशेषता है।
- मध्यकालीन बिहार मुगल सत्ता के विरुद्ध अफगानों की चुनौती का केंद्र रहा।
- महान अफगान शासक शेरशाह की कर्मभूमि बिहार में ही थी।
- 17 वीं शताब्दी में मुगलों के अधीन विकसित अंतरराष्ट्रीय व्यापार का एक समृद्धि केंद्र बिहार था।
- बिहार में ही सिक्खों के 10वीं और अंतिम गुरु श्री गोविंद सिंह जी का जन्म हुआ।
- आधुनिक काल में बंगाल एवं बिहार भारत में ब्रिटिश सत्ता के उदय का आरंभिक केंद्र रहे हैं। ब्रिटिश सत्ता के विकास के क्रम में बक्सर का निर्णायक युद्ध बिहार में ही लड़ा गया था।
- ब्रिटिश सत्ता को पहली सशक्त चुनौती देने वाला जन आंदोलन बहावी आंदोलन बिहार में ही संगठित हुआ।
- 1857 में बिहार के बाबू कुमार सिंह और पीर अली जैसे देशभक्तों ने ब्रिटिश सत्ता को ललकाया।
- गांधीजी ने बिहार के चंपारण में पहली बार सत्याग्रह का सफल प्रयोग भारत में जन आंदोलन के हथियार के रूप में 1917 में किया था।

- स्वतंत्र भारत का प्रथम राष्ट्रपति बिहार की भूमि ने प्रदान किया और लोकनायक जयप्रकाश नारायण की "संपूर्ण क्रांति" की कल्पना इसी क्षेत्र में व्यापक जन आंदोलन का प्रेरणा स्रोत रही।
- वर्तमान समय में बिहार सामाजिक न्याय सांप्रदायिक सद्भाव और समावेशी विकास का एक उदाहरण प्रस्तुत कर रही है।

● बिहार के इतिहास के अध्ययन संबंधी स्रोत

बिहार के इतिहास के अध्ययन संबंधी स्रोत निम्नलिखित हैं-

पुरातात्विक स्रोत

- पूर्व ऐतिहासिक युग के लिए मुंगेर, चिरांद (सारण), चेचर (वैशाली), सोनपुर (सारण) एवं मनेर (पटना) से ताम्र प्रस्तर युगीन वस्तुओं और मृदभांड प्राप्त हुए हैं।
- प्राचीन काल के लिए मौर्यकालीन अभिलेख, लौरिया- नंदनगढ़, लौरिया- अरेराज, रामपुरवा आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं, इस क्षेत्र में काफी मात्रा में सिक्के भी मिले हैं जिनमें आरंभिक आहत सिक्कों से गुप्त कालीन सिक्के तक शामिल हैं। राजगीर नालंदा पाटलिपुत्र और बाराबर पहाड़ियों में स्थित प्रमुख स्मारक भी पुरातात्विक स्रोतों के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

साहित्य स्रोत

- साहित्यिक रचनाओं में आठवीं शताब्दी के ईसा पूर्व में रचित शतपथ ब्राह्मण परवर्ती काल के विभिन्न पुराण का रामायण और महाभारत, बौद्ध रचनाओं में अंगुत्तर निकाय, दीघनिकाय, विनय पिटक, जैन रचना भगवती सूत्र आदि धार्मिक रचनाएं, विदेशी यात्रियों मेगास्थनीज, फाह्यान, इतिसेंग और युआन च्वांग के वृतांत, कौटिल्य की रचना अर्थशास्त्र और गुप्तकालीन साहित्यिक रचनाएं भी बिहार के प्राचीन इतिहास की जानकारी प्राप्त करने में सहायक हैं।
- मध्यकाल के लिए मिन्हाज की तबकाते नासिरी, इखत्सान देहलवी की बसातीनुल उन्स, शेख कबीर

ई. पू. 321 में चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से नन्द वंश के शासन का अन्त किया और मगध में मौर्य वंश की नींव डाली। **चन्द्रगुप्त मौर्य ने ही भारतीय इतिहास में प्रथम साम्राज्य की नींव रखी, जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र अखिल भारतीय साम्राज्य का केन्द्र बन गया।**

निष्कर्ष :

इस प्रकार छठी शताब्दी ई. पू. से चौथी शताब्दी ई. पू. का काल उत्तर भारत के लिए मूलतः मगध के उत्कर्ष का काल था।

मगध के उत्कर्ष में केवल इसके विभिन्न राजवंशों के शक्तिशाली शासकों का ही हाथ नहीं था बल्कि उसके उत्कर्ष में विभिन्न भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों का भी योगदान था। गंगा और उसके उत्तर में गण्डक और घाघरा नदियों ने तथा दक्षिण में सोन नदी ने मगध को सुरक्षा तथा यातायात और व्यापारिक प्रगति के साधन प्रदान किये। मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह सात पहाड़ियों से घिरी हुई थी और बाद की राजधानी पाटलिपुत्र भी गंगा और सोन के संगम पर स्थित होने के कारण न केवल सुरक्षित थी अपितु उत्तरी भारत के व्यापार का महान केन्द्र बन गई। मगध में गया के दक्षिण पूर्व में बहुत अधिक मात्रा में लोहा और ताम्बा उपलब्ध था। इससे मगध न केवल समृद्धशाली हुआ अपितु शस्त्र निर्माण में भी समकालीन राज्यों से आगे बढ़ गया। इसी कारण तत्कालीन शासकों में बिम्बिसार को सर्वप्रथम एक स्थायी सेना रखने में सफलता मिली। दक्षिण बिहार में स्थित जंगलों में उपलब्ध हाथियों का उपयोग सेना में किया गया। जंगल से प्राप्त लकड़ी मकान, शस्त्र और विभिन्न औजार बनाने में सहायक सिद्ध हुई। धातुओं की सहायता से मगधवासियों ने कृषि कार्य में काफी प्रगति की, जंगलों को साफ कर ज्यादातर भूमि को कृषि योग्य बनाया और साथ ही साथ व्यापारिक प्रगति के द्वारा राज्य के आर्थिक पृष्ठाधार को मजबूत किया। सांस्कृतिक दृष्टि से मगध में आर्यों एवं अनार्यों की सभ्यता का अद्भुत मिश्रण हुआ।

इन विभिन्न परिस्थितियों ने मिलकर मगध को एक ऐसी विशेष स्थिति प्रदान की, जिससे अन्य राज्यों

की तुलना में मगध अधिक तीव्र गति से विकास करता गया और अन्त में चन्द्रगुप्त मौर्य ने ई. पू. 321 में भारत में बिम्बिसार और अजातशत्रु के महान साम्राज्य की स्थापना के स्वप्न को पूरा कर दिया।

• मौर्य साम्राज्य

चन्द्रगुप्त मौर्य वंश का संस्थापक था। सिकन्दर के भारत से चले जाने के बाद चन्द्रगुप्त के रूप में एक ऐसे सितारे का उदय हुआ जिसने अपने प्रकाश से अन्य सभी को अन्धकार में डाल दिया। चन्द्रगुप्त मौर्य और उसके द्वारा स्थापित मौर्य वंश का प्राचीन भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इस वंश के शासनकाल से ही भारत का क्रमबद्ध एवं एकरूप इतिहास प्रारम्भ होता है।

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत:

- मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी यूनानी एवं भारतीय स्रोतों से प्राप्त होती है।
- सिकन्दर के साथ भारत आने वाले निआर्कस, आनेसिक्रिटस और अरिस्टीबुल्स ने भारत के बारे में बहुत कुछ लिखा है। यूनानी राजदूत मेगस्थनीज की इण्डिका से भी मौर्य काल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र से मौर्य काल के राजनीतिज्ञ इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।
- अशोक महान् के अभिलेख भी मौर्यकालीन इतिहास के अध्ययन के प्रमुख स्रोत माने जाते हैं।

चन्द्रगुप्त मौर्य

चन्द्रगुप्त के वंश और जाति के सम्बन्ध में ऐतिहासिक स्रोत और इतिहासकारों में मतभिन्नता पाई जाती है। ब्राह्मण ग्रंथों में यह दावा किया गया है कि चन्द्रगुप्त नन्द शासक की मुरा नामक रखैल से उत्पन्न पुत्र था, जिससे उसकी उपाधि मौर्य पड़ी थी। विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस से उसे वृशाल और कुलहीन बताया गया है। इसके विपरीत गैर ब्राह्मण स्रोतों यथा जैन, बौद्ध और क्लासिकी से ऐसा प्रतीत होता है कि चन्द्रगुप्त एक साधारण क्षत्रिय या वैश्य परिवार में उत्पन्न हुआ था। इन परस्पर

विरोधाभासी विचारधाराओं के बावजूद अब यह माना जाता है कि अज्ञात पिता के इस विख्यात पुत्र का जन्म ई. पू. 345 में मौर्य वंश के क्षत्रिय कुल में हुआ था। अल्पायु में ही वह चाणक्य के सम्पर्क में आया, जिसने उसके जीवन की धारा को एक नवीन दिशा प्रदान की। चाणक्य के परामर्श और सहयोग से ही वह कालान्तर में भारत में एक सुसंगठित और विशाल साम्राज्य की स्थापना करने में सफल हुआ।

चंद्रगुप्त के साम्राज्य विस्तार नीति -

चंद्रगुप्त और चाणक्य दोनों ही मगध के नन्द वंश के शासक से असंतुष्ट थे। इन्होंने नन्दवंश के उन्मूलन के लिए सैनिक आधार बनाकर सीमान्त प्रदेशों की ओर से मगध पर आक्रमण करने का निश्चय किया। सिकन्दर के वापस चले जाने के बाद चंद्रगुप्त ने चाणक्य की सहायता से पंजाब के गणतंत्रीय राज्यों की युद्धप्रिय जातियों में से सैनिकों को एकत्रित करना आरम्भ किया। इसके साथ ही उसने विदेशी यूनानियों को भारत से बाहर निकालने का आदर्श जनसाधारण के सम्मुख रखा। इस कार्य में उसे हिमालय के पर्वतीय प्रदेश के राजा पर्वतक से काफी सहायता मिली। इसके अतिरिक्त यूनानियों की स्वयं भारत में रहने की अनिच्छा, विभिन्न भारतीय शासकों का यूनानियों के विरुद्ध विद्रोह ई. पू. 325 में यूनानी क्षत्रप फिलिप की हत्या एवं ई. पू. 323 में सिकन्दर के असामयिक निधन ने चंद्रगुप्त के कार्य को और आसान बना दिया और वह यूनानियों को पंजाब से बाहर निकालने में सफल हुआ।

चंद्रगुप्त का यूनानियों पर विजय -

चंद्रगुप्त को भारत का **मुक्तिदाता** भी कहा जाता है क्योंकि उन्होंने यूनानियों के प्रभुत्व से भारत को मुक्ति दिलाई थी।

चंद्रगुप्त मौर्य ने अपनी विजय यात्रा की शुरुआत पंजाब से की। ई. पू. 321 के पहले ही उसने पंजाब को यूनानियों के शिकंजे से मुक्त करा लिया था। पर अभी भी कुछ यूनानी क्षत्रप इस क्षेत्र में मौजूद थे। चंद्रगुप्त मौर्य ने यूनानी विजय के शेष चिह्नों का सदा के लिए अन्त करने के उद्देश्य से पंजाब पर आक्रमण किया और सभी यूनानियों को देश से बाहर निकाल दिया। ई. पू. 317 में अन्तिम

यूनानी क्षत्रप यूदेमी भी भारत छोड़कर चला गया और चंद्रगुप्त ने सम्पूर्ण पंजाब और सिंध पर अधिकार कर लिया।

एक विजेता के रूप में चंद्रगुप्त मौर्य की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि सेल्यूकस के विरुद्ध विजय है। सेल्यूकस, सिकन्दर के साम्राज्य के पूर्वी भाग का शासक था। वह सिकन्दर द्वारा विजित भारतीय प्रदेशों पर पुनः यूनानी आधिपत्य की स्थापना के उद्देश्य से काबुल नदी के रास्ते सिंधु नदी के तट तक आ पहुँचा। 305 ई. पू. में चंद्रगुप्त मौर्य की सेना के साथ उसका युद्ध हुआ और उसे पराजित होना पड़ा। पराजित सेल्यूकस ने चंद्रगुप्त मौर्य के साथ संधि कर ली और उसको काबुल, कंधार, हेरात और बलूचिस्तान का प्रदेश दे देना पड़ा। इस प्रकार चंद्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य में सम्पूर्ण अफगानिस्तान और बलूचिस्तान सम्मिलित हो गया और उसके राज्य का विस्तार हिन्दुकुश पर्वत तक हो गया।

चंद्रगुप्त मौर्य ने यूनानियों से पंजाब को मुक्त कराने के बाद नन्दवंश के उन्मूलन का प्रयास प्रारम्भ किया। ई. पू. 321 में उसने धनानन्द को पराजित कर मगध राज्य पर अधिकार कर लिया।

चंद्रगुप्त मौर्य के भारत दिग्विजय के कुछ महत्वपूर्ण स्रोत -

- चंद्रगुप्त मौर्य के भारत दिग्विजय का पूर्ण विवरण नहीं मिलता है।
- परन्तु रूद्रदमन के जूनागढ़ अभिलेख से ज्ञात होता है कि सौराष्ट्र चंद्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य का एक अंग था। चंद्रगुप्त द्वारा पुष्यगुप्त को सौराष्ट्र का प्रान्तीय शासक नियुक्त किया गया था, जिसने वहाँ सुदर्शन झील बनवाई थी।
- सपारा स्थित अशोक के अभिलेख से पता चलता है कि चंद्रगुप्त ने सपारा पर भी अधिकार किया था।
- यूनानी विवरण, तमिल साहित्य और मैसूर के कुछ लेखों से ज्ञात होता है कि दक्षिण भारत के एक बड़े भू-भाग पर चंद्रगुप्त मौर्य का आधिपत्य स्थापित हो चुका था। इस प्रकार ई. पू. 321 से ई. पू. 298 के बीच चंद्रगुप्त मौर्य ने समस्त भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था और मगध के नेतृत्व

फ्रांसीसी मालगोदाम जिसका प्रमुख एम. डी. लॉब्रेस्टे था, पर कब्जा कर लिया।

1764 ई. के बक्सर के युद्ध में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने निर्णायक विजय हासिल की। अब कम्पनी महज एक व्यापारिक संस्था नहीं रह गयी बल्कि धीरे-धीरे वह भारत का भाग्य विधाता बन गयी। इसके साथ ही उसने बिहार और बंगाल के कई स्थानों पर व्यापारिक केन्द्रों की स्थापना की। 30 दिसम्बर 1774 ई. को पटना कमर्शियल रेजीडेन्सी की स्थापना की गई जो 1835 ई. तक काम करती रही।

अध्याय - 4

आधुनिक बिहार

मध्यकाल में बिहार विदेशी व्यापारियों की गतिविधियों का केन्द्र बना रहा। बंगाल के नवाब मुर्शिदा कुली खाँ और अलीवर्दी खाँ के शासनकाल में विदेशी कम्पनियाँ मुख्यतः बिहार में व्यापारिक कार्यों में संलग्न रही, उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं पर अंकुश लगा रहा।

9 अप्रैल 1756 ई. को अलीवर्दी खाँ की मृत्यु के बाद सिराजुद्दौला बंगाल का नबाब बना। इसी के शासनकाल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने कलकत्ता के फोर्ट विलियम की किलेबन्दी शुरू कर दी। इसके साथ ही बंगाल के नवाब और अंग्रेजों के बीच तनाव पैदा हुआ जिसकी परिणाम **पलासी के युद्ध** के रूप में हुई।

- 23 जून 1757 को पलासी के मैदान में अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला को पराजित कर दिया और मीर जाफर की सत्ता मात्र एक औपचारिकता थी, बिहार का प्रशासन राजा रामनारायण के हाथों में रहा, जिसे बिहार का नायब नाजिम बनाया गया।
- 1760 ई. में अंग्रेजों ने मीर जाफर के स्थान पर मीर कासिम को बंगाल का नबाब बनाया। उसने अंग्रेजों के हस्तक्षेप से मुक्त रहने के लिए 1761 ई. में अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से हटाकर मुंगेर में स्थापित कर ली। इस प्रकार बिहार का महत्त्व एक बार फिर स्थापित हुआ।
- मीर कासिम ने कम्पनी के कर्मचारियों द्वारा दस्तक के दुरुपयोग पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से भारतीय व्यापारियों को भी चुंगी देने से मुक्त कर दिया था। मीर कासिम के स्वतंत्र आचरण से अप्रसन्न होकर कम्पनी ने 1763 ई. में उसे बंगाल के नबाब के पद से हटा दिया और एक बार फिर मीर जाफर को बंगाल के नबाब के पद पर बैठाया।
- मीर कासिम मुंगेर से पटना चला आया और वहाँ से कुछ समय बाद वह 4 दिसम्बर 1763 ई. को कर्मनाशा नदी को पार कर अवध राज्य की सीमा में प्रविष्ट हुआ। उसने अवध के नवाब **शुजाउद्दौला और मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय** के साथ

मुण्डा विद्रोह

- बिहार के जनजातीय विद्रोहों में मुण्डा विद्रोह सबसे संगठित एवं विस्तृत विद्रोह था।
- मुण्डा विद्रोह की शुरुआत बिरसा मुण्डा के नेतृत्व में 1895 में हुई।

[मुण्डा जनजाति छोटानागपुर की मुख्य जनजातियों में से एक है। 19 वीं शताब्दी की शुरुआत तक यह जनजाति अपने पारम्परिक सामाजिक और राजनैतिक स्वरूप में शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कर रही थी।]

मुण्डा विद्रोह की शुरुआत

ब्रिटिश राज की स्थापना के साथ मुण्डा जनजाति के इलाकों में बाहरी लोगों का आगमन हुआ। इन बाहरी लोगों और उपनिवेशी राज की घुसपैठ ने उनकी पूरी सामाजिक व्यवस्था को तहत नहस कर दिया। इनकी जमीन इनके हाथों से निकल गयी और वे धीरे-धीरे किसान से मजदूर होते चले गये। उपनिवेशी हमलों ने जंगलों से भी उनके रिश्ते को तोड़ दिया। अंग्रेजी शासन ने वन भूमि, वन उत्पादों एवं गाँव की जमीन के उपयोग पर तरह-तरह के प्रतिबन्ध लगा दिये। पुलिस और लगान वसूल करनेवाले अधिकारी भी उनपर तरह-तरह के अत्याचार करने लगे। इस प्रकार जनजातीय क्षेत्रों में अंग्रेजों के आगमन के साथ ही मुण्डा जनजातियों की दुनिया ही उलट-पुलट गयी। उनके सामाजिक जीवन में जो मौलिक परिवर्तन आया, उसने उन्हें चिन्ता में डाल दिया। इन्हीं परिस्थितियों में एक मुक्तिदाता के रूप में बिरसा मुण्डा का अविर्भाव हुआ।

बिरसा मुण्डा का जन्म राँची जिला के तमाड़ परगना के उलिहातु नामक गाँव में एक बटाई काश्तकार के घर 15 नवम्बर 1874 को हुआ था। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में ही वे ईसाई धर्म, वैष्णव धर्म एवं छोटानागपुर क्षेत्र में हुए सरदार आन्दोलन के सम्पर्क में आ गये। शीघ्र ही उन्होंने महसूस किया कि आदिवासियों के शोषण में कहीं न कहीं ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों और उनकी नीतियों का हाथ है। अतः **आदिवासी समाज की सामाजिक बुराइयों को दूर कर विदेशी शासन को समाप्त**

करने को ही उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

बिरसा मुण्डा ने 1895 में एक नये सम्प्रदाय का प्रचलन कर नैतिक आचरण की शुद्धता, आम सुधार और एकेश्वरवाद का उपदेश देना शुरू किया। इन्होंने अपने अनुयायियों को अनेक बोंगो (देवताओं) के स्थान पर एक ईश्वर सिंग बोंगा की पूजा करने को कहा। उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के अस्तित्व को नकार दिया और अपने अनुयायियों को सरकार को लगान न देने का आदेश दिया। धीरे-धीरे उनके अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी। लोग उन्हें साक्षात् ईश्वर का अवतार मानने लगे और उन्हें धरती आबा के नाम से पुकारा जाने लगा। मुंडाओं के बीच बिरसा की बढ़ती लोकप्रियता से ब्रिटिश सरकार चिन्तित हो उठी।

24 अगस्त 1895 ई. को अचानक राँची के आरक्षी अधीक्षक जी. आर. मेयर्स ने गुप्त रूप से सोते हुए **बिरसा मुण्डा को गिरफ्तार कर लिया। नवम्बर 1895 ई. में उन्हें दो वर्ष की कड़ी कैद की सजा दी गयी।** इसके अतिरिक्त उन पर 50 रुपये जुर्माना भी लगाया गया। बिरसा मुण्डा के साथ उनके 15 अनुयायियों को भी दो-दो वर्ष के कठोर कारावास और 20 रुपये जुर्माना की सजा दी गयी थी। इससे कुछ समय के लिए मुण्डा आन्दोलन शिथिल हो गया।

महारानी विक्टोरिया की हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में बिरसा मुण्डा को जनवरी 1898 में हजारीबाग जेल से रिहा कर दिया गया। जेल से रिहा होने के कुछ ही समय बाद उन्होंने अपनी पुरानी गतिविधियाँ शुरू कर दीं। वे अपने अनुयायियों के साथ गाँवों का दौरा कर विरोध की शक्तियों को पुनरुज्जीवित करने लगे। शीघ्र ही उन्होंने 6000 मुण्डों का एक दल गठित कर उन्हें तीर धनुष और तलवार चलाने का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की। उन्होंने अपने अभिन्न मित्र और प्रमुख सलाहकार गया मुण्डा को इस प्रशिक्षण का दायित्व सौंपा। खूँटी को इस क्रान्तिकारी दस्ते का मुख्यालय बनाया गया। बिरसा के अनुयायियों ने सर्वादा, मुठू और बुरजू के ईसाई मिशन भवनों पर आक्रमण किया। 7 जनवरी 1900 को लगभग 300 मुण्डाओं ने तीर-धनुष, कुल्हाड़ी, बरछा, फरसा आदि से लैस होकर खूँटी थाना पर

आक्रमण कर दिया। उन्होंने एक सिपाही को मार डाला और कुछ घरों में आग लगा दी। 9 जनवरी 1900 ई. को राँची के उपायुक्त स्ट्रीट फिल्ड ने 150 जवानों के साथ मिलकर क्रूरतापूर्वक इस विद्रोह का दमन किया। लगभग 200 मुण्डा मारे गये। इसके बाद **सम्पूर्ण प्रशासनतंत्र मुण्डा विद्रोह को दबाने के लिए सक्रिय हो उठा।** एटके गाँव में अंग्रेज पुलिस बल ने गया मुण्डा को घेर लिया और गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। 28 जनवरी 1900 ई. को मुण्डा सरदार डंका मुण्डा और माझिया मुण्डा ने 32 विद्रोही मुण्डाओं के साथ आत्मसमर्पण कर दिया। गुप्त सूचना के आधार पर एक पेड़ के नीचे गहरी नींद में सोये बिरसा मुण्डा को उनकी पत्नी के साथ 3 फरवरी 1900 को गिरफ्तार कर लिया गया। बिरसा मुण्डा को राँची जेल भेज दिया गया। **30 मई को उन्हें हैजा हो गया, जिससे 2 जून 1900 को उनकी मृत्यु हो गई।** इसके बाद बिरसा के अनेक सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया गया। इन्हें प्राण दण्ड, काला पानी या विभिन्न अवधियों की कड़ी सजा सुनाई गई। जल्द ही मुण्डा विद्रोह का अन्त हो गया।

निष्कर्ष

यद्यपि मुण्डा विद्रोह असफल रहा पर इसने छोटानागपुर क्षेत्र के जनजातियों के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन का आधार तैयार कर दिया। इस विद्रोह के बाद जनजातीय लोगों के बीच एक जिम्मेदार शासन की स्थापना हुई।

ताना भगत आन्दोलन

1913-14 में छोटानागपुर की उराँव जनजाति ने बिरसा आन्दोलन से प्रभावित होकर एक आन्दोलन चलाया जो **ताना भगत आन्दोलन** के नाम से प्रसिद्ध है।

ताना भगत आन्दोलन जनजातियों द्वारा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध चलाया गया पहला राष्ट्रवादी आन्दोलन था। इस आन्दोलन का **प्रणेता जतरा भगत** था।

- जतरा भगत ने पूर्ववर्ती जनजातीय विद्रोहों का गहराई से विश्लेषण किया था, अतः उसने **इस आन्दोलन का उद्देश्य सामाजिक सुधार के साथ-**

साथ राजनीतिक स्वरूप में परिवर्तन लाने को घोषित किया।

- जतरा भगत ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध करने के पूर्व उराँव लोगों के सामाजिक और धार्मिक जीवन में पुरानी पवित्रता को बहाल करने पर जोर दिया। उसने अपने अनुयायियों से सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने, शाकाहारी भोजन करने एवं शोषक जमीन्दारों के यहाँ काम न करने का आह्वान किया। उसने संथालों को हाकिमों और पुलिस की आज्ञा का पालन करने से मना किया।
- जतरा भगत ने नेतरहाट में बिहार के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के लिए बन रहे आवास में उराँव लोगों को कुली के रूप में काम करने से मना कर दिया। इससे घबराकर ब्रिटिश अधिकारियों ने जतरा भगत और उसके अनेक सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया जतरा की गिरफ्तारी के बाद लियो उराँव के नेतृत्व में आन्दोलन जारी रहा।

ताना भगत आन्दोलन

मुख्य बिंदु

- **ताना भगत आन्दोलन मूलतः दीकूओं, जमींदारों और ब्रिटिश प्रशासन के अत्याचार के विरुद्ध था, पर इसमें हिंसात्मक संघर्ष के स्थान पर संवैधानिक संघर्ष का मार्ग चुना गया।**
- इस आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्त्ता झुंड में इकट्ठा होते और अपने हाथ में घंटा एवं घड़ियाल लेकर भजन- ताना बाबा ताना, टान टुन ताना गाते हुए शांतिपूर्वक जुलूस निकालते थे। इस भजन के आधार पर इस आन्दोलन के कार्यकर्त्ताओं को ताना भगत कहा गया।
- शिबू और माया भगत ने इस आन्दोलन को और तेज गति प्रदान की। 1919 तक ताना भगत आन्दोलन का बड़े क्षेत्र में प्रसार हो चुका था।
- यह आन्दोलन बेरो, कुरू, मांडर, सोनचिप्पी, पलामू एवं हजारीबाग जिला, लोहरदग्गा, सिसई, लापुंग, पालकोट, चैनपुर, रायडीह, घाघरा, विसुनपुर के अतिरिक्त मध्य प्रदेश के सरगुजा, जासपुर, अम्बिकापुर, उड़ीसा के गंगपुर तथा बंगाल के चाय बगानों में भी फैल गया।

- **भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी के पदार्पण से ताना भगत आन्दोलन को ठोस आधार प्राप्त हुआ।**
- ताना भगत आन्दोलनकारियों ने गाँधीजी द्वारा शुरू किये गये असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। उन्होंने असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रमों से स्वयं को जोड़ लिया। उन्होंने खादी वस्त्र और टोपी पहनना शुरू किया। स्वयं मदिरा सेवन त्याग कर उन्होंने शराब की दूकानों के सामने धरना दिया
- सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आन्दोलनों में भी इन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इनकी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस एवं प्रशासन द्वारा कठोर कार्रवाई की गई। इनकी जमीन बड़े पैमाने पर नीलाम कर दी गयी। इन्हें गिरफ्तार कर जेलों में डाल दिया गया जहाँ के जीवन से तालमेल नहीं बैठ पाये के कारण बड़ी संख्या में वे मर गये। फिर भी इन आन्दोलनकारियों का उत्साह कम नहीं हुआ और इन्होंने कांग्रेस के कार्यक्रमों से अपना तादात्म्य बनाये रखा।
- राष्ट्रवादी आन्दोलनों में अपनी सहभागिता के बाद भी इन्होंने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखा और तीनों बड़े आन्दोलनों के बीच के समय में इन्होंने स्थानीय मुद्दों को लेकर अपनी सक्रियता बनाये रखी। बिहार की जनजातियों का राष्ट्रीय मुख्य धारा में जुड़े रहने का सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक उदाहरण ताना भगत आन्दोलन के रूप में दृष्टिगोचर होता है।

1857 का विद्रोह और बिहार

1857 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सत्ता के विरुद्ध एक विद्रोह हुआ। राष्ट्रीय जागरण के पूर्व ब्रिटिश विरोधी आन्दोलनों की श्रृंखला में 1857 के विद्रोह का अग्रगण्य स्थान है। **सिपाही विद्रोह** के नाम से प्रसिद्ध, यह विद्रोह **ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ एक सुदृढ़ एवं सशक्त जनआन्दोलन** के रूप में उभरकर सामने आया।

● 1857 के विद्रोह में बिहार का योगदान -

- **1857 के विद्रोह में बिहार का प्रमुख योगदान रहा है।**
- 29 अप्रैल 1857 ई. को बंगाल और बैरकपुर छावनी में क्रान्ति की प्रथम चिंगारी प्रज्वलित करने वाला सिपाही मंगल पाण्डेय बिहार के बाहरी निवासी थे।
- 10 मई 1857 को मेरठ की छावनी के सैनिकों ने विद्रोह कर मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को बादशाह ए हिन्दुस्तान के रूप में सम्राट की गद्दी पर बिठा दिया। इसके साथ लगभग सम्पूर्ण उत्तरी भारत विद्रोही बन गया।
- बिहार में असंतोष एवं विद्रोह का पहला विस्फोट 12 जून 1857 को हुआ। इसी दिन संधाल परगना जिला के देवघर अनुमण्डल के निकट स्थित रोहिणी गाँव में 32वीं रेजिमेन्ट के तीन सैनिकों ने मैकडोनाल्ड, सर नार्मन लेस्ली और सर्जन मि० ग्राण्ट पर जानेलेवा हमला किया। लेस्ली को तत्काल मृत्यु हो गयी।
- मैकडोनाल्ड ने क्रूरतापूर्वक विद्रोह को दबा दिया एवं हमलाकर सैनिकों को कोर्ट मार्शल के बाद 16 जून 1857 को फाँसी के फंदे पर लटका दिया तथा 32वीं रेजिमेन्ट का कार्यालय रोहिणी से भागलपुर स्थानान्तरित कर दिया गया।
- जुलाई महीने के शुरुआत में ही पटना विप्लव की चपेट में आ गया था। 3 जुलाई 1857 को पटना सिटी में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह हुआ। गुरहट्टा के पुस्तक विक्रेता पीर अली के नेतृत्व में 200 जेहादियों ने चौक तक के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।
- बिहार में अफीम व्यापार के प्रतिनिधि लायल ने अति उत्साह में अपने कुछ सिपाहियों के बल पर विद्रोह को दबाना चाहा, पर इसे अपने प्राण गँवाने पड़े।
- पटना के **कमिश्नर टेलर** ने बड़ी तत्परता से विद्रोह को दबा दिया। उसने मेरठ में विद्रोह की शुरुआत होते ही पटना की सुरक्षा के लिए रेटरे के नेतृत्व में 200 सिख सैनिकों की टुकड़ी तैनात कर दी थी।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - <https://youtu.be/gPqDNlc6UR0>

Rajasthan CET 12th Level - <https://youtu.be/oCa-CoTFu4A>

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s>

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - <https://youtu.be/2gzzfJyt6vl>

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

whatsa pp- 1 <https://wa.link/gubxri> web.- <https://bit.ly/42AN5sz>

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1 st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें



Whatsapp - <https://wa.link/gubxri>

Online order - <https://bit.ly/42AN5sZ>

Call करें - 9887809083